{4.}

पंचदेव

ज ग दी श प्र सा द म ण्ड ल सा हि त्य

सं. उमेश मण्डल

पंचदेव

पंचदेव

(जगदीश प्रसाद मण्डल साहित्य)

सं. उमेश मण्डल



पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

ISBN : 978-93-87675-81-0

दाम : ₹49/-

पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

PANCHDEO : 4

Compilation by Umesh Mandal of Select Maithili Stories of Shri. Jagdish Prasad Mandal.

दू शब्द

पाँच गोट कथाक सङ्कलन, तँए पोथीक नाओं 'पंचदेव' राखल गेल अछि। 'पंचदेव'क एकसाए संग्रह अछि जे एकसंग प्रकाशित भऽ रहल अछि। साएओ संग्रहक कथा सभ श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ सङ्कलित कएल गेल अछि। मण्डलजी मैथिली-मिथिलाक ओहन रचनाकार छैथ, जनिक रचनामे वर्त्तमान अछि, यथार्थ अछि। तँए, भाषा-साहित्यक दुनियाँमे मण्डलजीकेँ सभठाम जानल-मानल जा रहल अछि।

मैथिली साहित्यमे उत्कृष्ठ रचना तथा जीवन्त भाषाक प्रयोग हेतु मैथिली साहित्यक एकल अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार- 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड' श्री जगदीश प्रसाद मण्डलेजीकेँ प्रदान कएल गेलैन। तैसंग 'यात्री सम्मान', 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'विदेह बाल-साहित्य पुरस्कार', 'वैदेह सम्मान', तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सेहो सम्मानित छैथ। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक आइ धरिक (4 अक्टुबर 2018) कथा सभकेँ सङ्कलन करैत बेहद प्रसन्नता भऽ रहल अछि। ऐ हेतु कथाकारक आभारी छी।

संगे, आदरणीय श्री मन्त्रेश्वर झा, डॉ. शिवशंकर 'श्रीनिवास', श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र आ गजेन्द्र सर (श्री गजेन्द्र ठाकुर)जीक आभारी छी.! जनिक मार्ग दर्शन पाबि किछु-किछु कए रहल छी।

क्रमश: प्रो. धीरेन्द्र कुमार, डॉ. शिकुमार प्रसाद, श्री ओम प्रकाश झा, श्री कपिलेश्वर राउत, श्री राजदेव मण्डल आ श्री दुर्गानन्द मण्डलजीक सेहो आभारी छी।

ऐ साएओ पोथीक रचनाकेँ पुस्तकाकार रूप देबए-मे श्री नन्द विलास राय, श्री राम विलास साहु आ श्रीमती पुनम मण्डलक भरपूर सहयोग भेटल, ई सभकियो प्रसंशाक प्रात्र छैथ। हिनका सबहक प्रति हम आभार प्रकट कए रहल छी। तैसंग, पूरक सहयोगीमे अपन तीनू सन्तान क्रमश: पल्लवी, तुलसी आ मानबक चर्च करब सेहो आवश्यक बुझि रहल छी। तीनू बच्चाकेँ धन्यवाद-आशीर्वाद।

आइ-काल्हिक भागम-भागकेँ देखैत अपने लोकनिक सुविधा लेल छोट-छोट पोथीमे श्री मण्डलजी-रचित छोट-पैघ सभ तरहक कथाकेँ जोड़ियेलौं हेन। आशा अछि अपने लोकैनकेँ नीक लागत। सादर...।

उमेश मण्डल

निर्मली

24 नवम्वर 2018

कथाक सत्तैर-

मुफतिया माल

हेमकान्त बाबू आ दिवाकान्त काका लङ्गोटिया संगी। ओहन लङ्गोटिया संगी नहि, जे कुश्तीक अखड़ाहाक होइए, आ ने वएह जे बुढ़ाड़ीमे घर-परिवार छोड़ि वा छुटि गेने लङ्गोटा धारण करैत लङ्गोटिया संगीक संग तीर्थ-व्रत, कीर्तन-भजनमे अपन दिवस गमबैत अछि। ओहो लङ्गोटिया संगी नहि, जे बाल-बोधकेँ बोधि माए जखन लङ्गोटा पहिरा बच्चाकेँ आँगनसँ अगुआ टोल-पड़ोसक बच्चाक संग खेलैले छोड़ि दइत।

हेमकान्त बाबू आ दिवाकान्त कक्काक बीच ओहन लङ्गोटिया सम्बन्ध छैन जे गामक स्कूलमे दुनू गोरेकेँ लङ्गोटा पहिरौने पिता दाखिला करौलखिन। तहियेसँ दुनू गोरेक बीच सम्बन्ध रहलैन। भिनसुरका समाचारमे जहिना रेडियो-टी.बी. रातुक घटना सबहक प्रसारण करैत, तहिना सौंझुका समाचारमे दिनुका घटना प्रसारित करिते अछि।

वएह भिनसुरका समाचार गाम-समाजक सुनै-बुझैले चाह पीब पान खा दिवाकान्त काका पलंगपर सँ उठि विदा होइते रहैथ तखने भातीज- रवि शंकर- आबि कहलकैन-

“काका, अनर्थ भऽ रहल अछि!”

दिवाकान्त काका तीन साल पहिने कौलेजसँ सेवा निवृत्ति भेल

छैथ, भातीजक बातक कोनो अरथे ने लगलैन। अर्थो केना लगितैन, जे शब्द अपने अनर्थ अछि ओकर अर्थे की हएत। तैबीच रवि शंकर ऐ ताकमे दिवाकान्त दिस आँखि उठा-उठा तकैत जे काका अकचकाइत किछु बजता, मुदा से किछु ने देखलक। देखबो केना करैत काका अपने अथाहमे उगऽ-डुमऽ लगला। तखन केना केकरो घटना सुनि अकचकेबे करितैथ। मुदा से भेल नहि। खगेन्द्र जकाँ खगक भाषा बुझैक खियालसँ दिवाकान्त काका पुछलखिन-

“बौआ, रातिमे कोनो तेहेन घटना केतौ भेल?”

घुमौन बात बजैक कारण रवि शंकरक रहै जे दुनू गोरे माने हेमकान्तो बाबू आ दिवाकान्तो कक्काक बीच घनिष्ठ सम्बन्ध, तँए परदाक बीच अपन विचार रखने छल।

मुदा घटना तँ घटना छी। ओना, घटनोक प्रसारण केते ढंगसँ होइते अछि, केतौ तिलकेँ तार बना प्रसारण होइत तँ केतौ तारकेँ तिल बना देल जाइए, तँए तिलकेँ तिल आ तारकेँ तार कहि प्रसारित नइ होइए, एहनो तँ नहियेँ अछि, सेहो तँ होइते अछि। कनी आगू ससरैत रवि शंकर बाजल-

“काका, अहाँक संगीकेँ तँ..?”

कहि रवि शंकर चुप भऽ गेल। ‘संगी’ सुनि दिवाकान्त काकाकेँ मन आगू बुझैक हुलास जगलैन। बजला-

“बौआ, एना तम्माक मुड़ी छोपि कऽ नइ बाजह।”

ओना, रवि शंकरो बुझैत जे तेलिया-फुलिया लगा दिवाकान्त काका ने अपने बजै छैथ आ ने अनके मुँहक नीक लगै छैन। मुदा बुझैक जिज्ञासा तँ छैन्हे। रवि शंकर बाजल-

“काका, हेमकान्त काकाकेँ बेटा कपार फोड़ि देलकैन।”

‘बेटा कपार फोड़ि देलकैन’ सुनिते दिवाकान्त कक्काक माथमे

कठझालि जकाँ झन्न दऽ उठलैन। रवि शंकरोक मनमे भेल जे भरिसक संगीक कपार फुटब सुनि काका बेथा गेला, बेथापर बेथा लादब नीक नहि। तँए जान छोड़ा घसैके जाएब नीक हएत। बाजल-

"काका, कनी दूध-ले जाएब, परसुका नोत अछि, जाइ छी।"

'हँ-हूँ' दिवाकान्त काका किछु ने बजला। रवि शंकर चलि गेल।

एक संग अनेको प्रश्न दिवाकान्त कक्काक मनमे सिनेमाक रील जकाँ नाचए लगलैन। ऐ अवस्थामे बेटा कपार फोड़ि देलकैन! ओना, रेडियो-अखबारमे एहेन समाचारक कमी नहियेँ रहैए मुदा लगक लोक सभ दिन हेमकान्त रहला। जखन समाचार कानमे पहुँच गेल तखन जँ खोज-पुछारि नइ करिऐन, जिज्ञासा नइ करिऐन सेहो केहेन हएत। मुदा खोजो-पुछारि करै-करैमे भेद तँ अछिए। नीक काजक खोज-पुछारि आ अधला काजक खोज-पुछारिमे अन्तर तँ अछिए। अधला काजक खोज-पुछारिक एकटा माने ईहो तँ ऐछे जे व्यंग्य-स्वरूप खोज-पुछारि करऽ आएल छैथ!

मुदा लगले मनमे उठि गेलैन जे हमरा कान तक समाचार आबि गेल से हेमकान्त केना बुझता जे हमर आशा भेँट करैक वा जिज्ञासा करैक हेतैन। फेर लगले मनमे उठि गेलैन जे ई तँ भेल अपन मुँह नुकाएब। नीक आकि बेजए ओ केलैन, बेटा हुनका कपार फोड़लकैन, आ मुँह नुकाबी हम, ईहो तँ नीक नहियेँ हएत। असमंजसमे पड़ल दिवाकान्त काकाकेँ ने अक् चलैन आ ने बक्। मुदा लगले भेलैन जे रवि शंकर तँ एतबे बाजल जे 'बेटा कपार फोड़ि देलकैन।' किए फोड़लकैन, केना फोड़लकैन से तँ नइ बाजल तँए धड़फड़ा कऽ पहुँचबो आ जर-जिगेसा करबो जरूरी नहियेँ अछि। कोनो कि हम डॉक्टर छी जे मलहम-पट्टी करबैन। मन थीर भेलैन। थीर होइते मन नचलैन। मन नचलैन ई जे धड़फड़मे हेमकान्तक ऐठाम जाएबो नीक नहियेँ, दुनू बापुतक बीचक बात छी। जखने एक

दिस जाएब तखने दोसर दिससँ जाएब।

होइते छै जे दू गोरेक झगड़ामे जखने एकसँ कियो गप करैए तखने दोसर बुझैए जे किछु सिखा-बुधी कऽ रहल अछि। दिवाकान्तकेँ फेर भेलैन जे हेमकान्ते बाबूटा हमरा अपन संगी नइ बुझै छैथ, से नइ ने अछि। गामक के कहए जे कौलेजोक चिनहरबा, अड़ोसो-पड़ोसियो आ गौंआँ-घरूआ तँ बुझिते अछि। से नइ तँ पहिने नीक जकाँ घटनाक घटित घटक बुझि कऽ जाएब वा नइ जाएब से विचारब। संगबे रहला तँ स्कूल-कौलेजक पढ़ाइ आ नोकरी धरिक रहला, एकर माने ई नइ ने भेल जे जइ घटनामे हेमकान्तक कपार फुटलैन तइमे हम हुनकर संग रहिऐन। जाइ कि नइ जाइ, तेकर हँ-निहँस दिवाकान्त काका कइये ने पाबि रहल छैथ। मनमे उड़ी-बीड़ी तँ लगले छैन।

फेर भेलैन जे दोसर-तेसरसँ पुछि कऽ पहिने भँजिया ली आ पछाइत जाएब आकि नइ जाएब से विचार कऽ लेब। मुदा लगले भेलैन जे गामोक लोक तँ बेसी तीन-तसिये अछि, कियो हेमकान्त दिससँ बाजत तँ कियो शिलाकान्त दिससँ, जइसँ नीक जकाँ भाँजो लगब तँ कठिने अछि। दिवाकान्त कक्काक नजैर घुमैत-फिड़ैत उमाकान्तपर पड़लैन। उमाकान्ते गाममे एहेन लोक अछि जे दूध-पानि बेड़ा कऽ बजैए। जइसँ सत् बात बुझैमे आबि जाएत।

मुदा लगले फेर भेलैन जे जँ कहीं उमाकान्तोकेँ अपन देखल-सुनल नइ होइ आ उहो उड़न्तीए कहि दिअए तैयो तँ भाँज नहियेँ पएब। फेर भेलैन जे हाथ-पर-हाथ रखि चुपचाप बैसबो तँ नीक नहियेँ हएत। से नइ तँ उमाकान्ते ऐठाम पहुँच भाँज लगाएब नीक रहत। तहूमे वेचारा जँ अपने काने सुनने हएत सेहो कहिये देत आ जँ केकरो आनक मुँहक सुनने हएत सेहो कहिये देत। किछु अछि उमाकान्त तँ बागर धान जकाँ आनसँ नमहर तँ अछिए। सेठ-साहुकार जकाँ लौली-बाजी दइ बला नहियेँ अछि...। यएह सोचि दिवाकान्त काका उमाकान्तसँ भेँट करऽ विदा

भेला।

संयोग कहियौ आकि घटना, उमाकान्तो हेमकान्ते बाबू ऐठामसँ अबैत रस्तेमे रहए कि दिवाकान्त कक्काक नजैर पड़लैन। कोनो नीक बोल सुनैले वचनामृतक खगता होइते अछि। दिवाकान्त काका बजला-

"उमाकान्त, तोँ बड़ भाग्यशाली छह, बहुत दिन जीबह!"

दिवाकान्त कक्काक आसिर वचन सुनि उमाकान्तोक मन ठनकल, ठनकल ई जे एना अगुरवारे तँ दिवाकान्त काका कहियौ आसीर-वचन नहि कहै छला, आइ किए..?

फेर लगले उमाकान्तक नजैर दुनू गोरे- दिवाकान्त-हेमकान्त-क सम्बन्धपर पहुँच गेल, बाजल-

"काका..!"

'काका' कहि उमाकान्त चुप भऽ गेल। उमाकान्तकेँ चुप होइत देख दिवाकान्त कक्काक मन तर-ऊपर हुअ लगलैन। जँ नीक समाचार रहैत तँ ढोल पीट-पीट बजैत, मुदा बकार बन्न भऽ गेलै! जरूर किछु तेहेन बात अछि जे बजै ने चाहैए। दिवाकान्त काका कहलखिन-

"उमा, तोँ अपनाकेँ आन किए बुझै छह। बेटा-भातिज भऽ कऽ एना धखाइ किए छह?"

दिवाकान्त कक्काक विचार उमाकान्तक मनकेँ उत्साहित केलक। उत्-सुक मने उमाकान्त बाजल-

"काका, बजैत लाज होइए, तँए... ।"

'तँए' सुनि उमाकान्तकेँ हड़बड़बैत दिवाकान्त काका कहलखिन-

"कनीको रखि-जोगा कऽ नइ बाजह। तोरा धाख कथीक होइ छह।"

उमाकान्त बाजल- "काका, हेमकान्त कक्काक पत्नी आठ-नअ बर्ख

पहिने मरलखिन से तँ बुझले अछि।"

"हँ-हँ किए ने बुझल रहत। हुनकासँ एक साल पहिने हमरो पत्नी मुइली। दसम बरखी एक मास पहिने केने छेलिऐन। हिनकर दस तँ हुनकर नअ बर्ख भेबे केलैन।"

दिवाकान्त कक्काक बहैत मनकेँ अपना दिस मोड़ैत उमाकान्त बाजल-

"ओ केहेन धुड़फन्दा लोक छैथ से तँ बुझले अछि।"

'धुड़फन्दा' सुनि दिवाकान्तो कक्काक मन धुड़खेल खेलऽ लगलैन। बजला-

"बौआ उमाकान्त, तोरा बुझल हेतह की नइ, हम ओइ बिआहोमे बरियाती रही, राज मोरंगमे की-की भेल से की कहबह।"

कहि काका विस्मित हुअ लगला। दिवाकान्त काकाकेँ विस्मित होइत देख उमाकान्तोक जिज्ञासा जगल। बाजल-

"काका, एना किए अदहे मुहसँ निकलल आ अदहा मुहेँमे रहि गेल?"

एक तँ ओहिना दिवाकान्त काका, जहियासँ कौलेज छोड़लैन तहियासँ वतरसिया भऽ गेल छैथ तैपर उमाकान्तक मोलामा पाबि दिवाकान्त काका बमैक कऽ उगलऽ लगला-

"उमा बौआ, हेमकान्त बेटाक बिआहक बात-चीत पक्का केलैन। तेरह लाख नगद, अतिरिक्त आधुनिक वस्त्र-जात आ तीन साए बरियातीक बेवस्था। कन्याँगतोक मनमे मस्ती चढ़ले रहै, हरे-हरे सभ किछु गछिए नै लेलकैन जे अगुरवारे दाइओ देलकैन। बरियातीमे हमहूँ रही।"

उमाकान्त- "तखन तँ अहाँकेँ सभ बात बुझले अछि।"

जहिना रटल बात उझकी मारि-मारि मुहसँ निकलऽ चाहैत तहिना दिवाकान्तो कक्काक मनमे उझकी उठैत रहैन, ओना, तेरह लाख रूपैआ सुनि उमाकान्तकेँ अपन समाचारक सत्यापन भऽ गेल। सत्यापन ई जे वएह रूपैआ कपार फोड़ै-फोड़बैक कारण छल। मुदा आरो बेसी भाँज लगबैक जिज्ञासा उमाकान्तक मनमे जगले रहइ। जागल लोक जहिना आँखि उठा-उठा चारूकात तकैत तहिना उमाकान्तो आगूक बात बुझैक कोशिशमे पियासल बटोहीक नजैर गढ़ि, दिवाकान्त काकापर समधानल तीर छोड़लक। तीर जेना दिवाकान्त कक्काक बीचला छातीमे लगल होइन तहिना छातीक पीड़ासँ पीड़ित होइत बजला-

"बौआ उमा, छाँह-छूँहमे बात बुझिये गेलौं, मुदा तेकरा अखन रहऽ दहक, बूढ़-पुरान भेलौं, कखन छी कखन नइ रहब, तेकर कोनो ठीक अछि।"

आगूक बात दिवाकान्त कक्काक मनेमे रहैन आकि तइ बिच्चेमे अपन गोटी लाल होइत देख उमाकान्त बाजल-

"काका, अहूँ जँ तगेदे भरोसे रहब जे उमाकान्त फल्लाँ-फल्लाँ बात पुछत तखन ओकरा बुझा कऽ कहबै से अहीं कहू जे अहाँ सन भेल?"

ओना, दिवाकान्त काका दृष्टिकूटो आ चिक्कारियो भाषाक अनुभवी शिक्षक कौलेजमे बुझल जाइ छला, मुदा विद्यालय आ समाजमे की दूरी बनल अछि सेहो तँ बुझिते छैथ। तँए सेवा निवृतिक पछाइत दिवाकान्त काका कौलेजक विषयकेँ कौलेजेमे निवृत्ति कऽ समाजमे समाजिक विषय धारण कऽ अपन बदलैत परिवेशमे अपनोकेँ समावेश कइये रहल छैथ।

'अहीं कहू जे अहाँ सन भेल?' पैछला बातक फल-फूल भेल। दिवाकान्त कक्काक मनमे भेलैन जे ठीके उमाकान्त बाजल। किछु छी तँ

बेटा-भातीज छी जँ ओकरा पुछै भरोसे रहब आ जँ ओकरा ओ बात बुझले ने होइ, तखन की पुछत। तेतबे किए जँ ओकरा बुझले रहितै तँ अनेरे दोहरा कऽ अपन समए किए दुइर करैत...।

..रेही चलैत मटकूरमे जहिना पानि-मक्खन चारू दिस पेनी-सँ-छिप्पी धरि नचैत रहैए तहिना दिवाकान्त कक्काक मन नचलैन। नचिते बजला-

"बौआ, धड़फड़ाएल नै ने छह?"

उमाकान्त अपन सुतरैत लक्ष्य देख गुलेतीमे गोलीक निशान साधि बाजल-

"काका, अधपोखैरयामे जहिना जुड़शीतलक दिन थाल-कोदो आ पानि एकबट्ट भऽ जाइए तहिना ने आइ समाजक पोखैरमे भऽ गेल अछि! भरि दिन कोनो आन काज करैक मन थोड़े हएत।"

श्रोता-वक्ताक अनुकूल वातावरण होइत देख दिवाकान्त काका बजला-

"बौआ, तोहर घर जँ लग रहितऽ तँ तोरे ऐठाम जेतौं, चाहो पीबतौं आ गपो-सप्प करितौं। मुदा अखन तँ हमरा डेढ़िये पर छह, तँए दलानेपर चलह। चाहो-पान खाएब पीब आ अपन अनुभवक किछु किछु बातो कहबह।"

पिपाशु लोक उमाकान्त, तँए समाजक काजक बात-विचार सुनै-करैक समयकेँ अधला नइ बुझि उपयोगीए बुझैत अछि। तैसंग मनमे ईहो उठि गेलै जे अपन दरबज्जापर लोक भरिमुँह बजैए, सेहो गर देख उमाकान्त बाजल-

"बहुत दिनक पछाइत दुनू बापुतक बीच गप-सप्प हएत काका। तँए जहाँ धरि पार लगत तेते गप कइये लेब।"

एक तँ भिनसुरका उखड़ाहाक नरमाएल मन, तैपर जराएल

समाचार सुनि दिवाकान्त कक्काक मन इनहोर पानि जकाँ खौलैत रहबे करैन। बजला-

“बौआ, आगि-छाइ कि अगुतेने मानत, ई नइ अबिसवास करह जे चाह नइ पीब। ओना, आनक पुतोहु जकाँ हमर पुतोहु बतकेहलि नइ छैथ, ओ बुझि गेली। तैबीच अपना सभ मुँह चुपे किए राखब।”

नोइसिक शीशीक मुन्ना खोलि दिवाकान्त काका नाकमे भिड़ौलैन। भिड़ैबते छीका भेलैन। छीका होइते बजला-

“बौआ, औझुका बात ताबे तरमे रहऽ दहक, अपन इस्कूलेक जिनगी लगसँ पहिने पैछला बात सुनबै छिअ।”

हेमकान्त बाबू आ दिवाकान्त कक्काक गाम सटले, बड़का गामक टोले जकाँ। मुदा दुनू वित्तीय गाम तँए दूटा नाम तँ अछिए। ओना, नाम दू रहितो दिनानुदिनक किरिया-कलाप दुनू गामक एकरंगाहे अछि। एकबधू खेत, जोड़ल सड़क आ जोड़ल स्कूल तँ अछिए।

दुनू गोरे एके जातिक सेहो छैथे। मुदा एक जाति रहितो दुनूक कुल-मूलमे कनी तरपट, तँए समाजिक भोजो-भात आ कुटुमो-कुटमारक सम्बन्ध नहियेँ होइत अछि। मुदा केतबो दूरी किए ने होइ, बेकतीगतो सम्बन्ध आ आन-आन तरहक काजो उदेमक सम्बन्ध तँ छैन्हे।

दिवाकान्त काका तेज गतिये बाजथि, तँए उमाकान्त पजरल चुल्हिक खोरनी जकाँ बीच-बीचमे खोरनी चलाएब नीक बुझलक। ओना, खोरनी चलबैक पाछू उमाकान्तक मनमे ईहो रहै जे धाराक प्रवाहमे केते झूठो बात खढ़-पात जकाँ अलगि जाइए, सेहो हएत। बाजल-

“नमहर जिनगीक नमहर खेरहा हएत, तँए कनी..?”

उमाकान्तक इशारा दिवाकान्त काका बुझि गेला। बजला-

“बौआ, हेमकान्तो आ हमहूँ दुनू गोरे संगे गामक स्कूलमे भर्ती

भेलौं। शुरूहेसँ ओ चंगला, चंगलाक माने- झूठ-सत् आ सही-गलतकेँ ओइ रूपे मिश्रण करैत भषो आ काजो बना लइत जेकरा बूझब-परिखब भारी अछि। हमरा सन-सन अनेको ओहन छैथे जे नइ बुझि पाबि रहला अछि। हमहूँ कि भाँज बुझितौं, गुण भेल जे दृष्टिकूटो आ चिक्कारियो भाषा कनी पढ़ि लेलौं।"

दिवाकान्त कक्काक खुलल छाती देख उमाकान्त बुझि गेल जे कक्काक बातपर कनी-कनी जँ ऊपरसँ पानिक छिच्चा जकाँ दैत रहबैन तँ अनेरे ने सोगर बनल रहता। बाजल-

"काका, धिया-पुता गपक अखन कोन बजैक खगता अछि...।"

वतरसिया दिवाकान्त काका छैथे, चौकियेक ओछाइनपर दुनू ठेहुन सोझ करैत मुस्की दैत बजला-

"ई तँ पेनी कहलियह उमा, अइमे एतबे बूझह जे जहिना लोअर प्राइमरी स्कूलसँ हाइ स्कूलक दसमा धरिक विद्यार्थीक रिजल्ट सिरिफ परीक्षेक कॉपी जाँचि टा शिक्षक नइ दइ छथिन, किलासमे प्रश्नोत्तरक संग विद्यार्थीक लगनो देख दइ छथिन, तँए दसमा तक नीके-ना रहलौं। मुदा मैट्रिकक परीक्षामे हमरासँ पनरह-बीस नम्बर ओकरे बेसी रहइ। ओना, फस्ट डिवीजन दुनू गोरेकेँ भेल, तँए ओइपर कान-बात नइ देलिऐ।"

उमाकान्तक मनक ब्रह्म जगल। जेना ओ बुझि गेल जे किछु रहस्यक बात छिपल अछि, जे खोलए चाहै छैथ मुदा खोलि नइ पाबि रहला अछि। पोखैरक घाटपर पानिकेँ धफाड़ि जहिना फरिच बनाएल जाइए तहिना उमाकान्त बाजल-

"काका, जखन बचपनेक बात उठेलौं तखन तेना कऽ कहिऔ जे दोहरा कऽ पुछऽ नइ पड़ए।"

तैबीच पुतोहु चाह नेने आबि गेलैन। शराबक शीशी देखते पिआककेँ जहिना मन चटपटाए लगै छै तहिना दिवाकान्तो कक्काक मन

चटपटेलैन। बजला-

“बौआ उमा, दुनियाँमे भगवान केकरो पुतोहु देलखिन तँ हमरो देलैन। हमर चौबीसो घन्टाक खटनी हिनका बुझल छैन। करवन चाह पीब, करवन पानि, आ करवन खेनाइ खाएब तइ सबहक हिसाबे अपनाकेँ परिवारमे ठाढ़ रखने छैथ।”

सोझहामे बजलासँ जँ बड़प्पनक भाव अबैत अछि, तँ की सत-बातक भाव नइ औत? एबे करत...।

..चाहक घोंट लइते जेना दिवाकान्त कक्काक कण्ठ सर्ड़ास भेलैन। बीचमे टभैक पड़ला-

“बौआ, लगला सूरमे एकटा आरो बात सुनि लएह, बिनु कहने जँ आगू बढ़ि जाएब तँ ओ बिच्चेमे हेरा जेतह।”

दिवाकान्त कक्काक मनक उत्फुल विचार देख उमाकान्त बाजल-

“काका, अहाँकेँ कि मुँह रोकने छी। हमहूँ कियो आन छी जे...।”

सह पाबि सहैट दिवाकान्त काका बजला-

“बौआ, जइ दिन मैट्रिकक सर्टिफिकेट लइले गेलौं, तरवन जे हेमकान्तक डेट ऑफ वर्थ मिलेलौं तँ हमरासँ चारि बर्ख कम रहइ।”

बीचमे टोन दैत उमाकान्त बाजल-

“नइ बुझलौं, काका?”

‘नइ बुझलौं’ सुनि दिवाकान्त कक्काक मनमे भेलैन जे भरिसक मोटगर शब्दक प्रयोग भऽ गेल तँए उमाकान्त नइ बुझि पेलक। सिलौटपर जहिना कोनो वस्तुक चटनी हलसँ पीस हल्लुक बनौल जाइए, जइसँ ओ चाटै-जोकर भऽ जाइए, तहिना दिवाकान्त काका मेहियबैत बजला-

“उमेरक चोरीमे की-की फड़ै छै से भरिसक उमा तोरा नजैरमे नइ छह। खाएर छोड़ह नइ छह तँ नइ छह, मुदा एते बुझि कऽ आँखिक

मोटरी बान्हि रखिहऽ जे ओइ-गाछ मे नोकरीक अन्तिम ओ समए नुकाएल ऐछे जइमे उच्च कोटिक दरमाहाक संग उच्च पद सेहो नुकाएल अछि। तैसंग नुकाएल अछि, एकसँ अनेक बिआह, तैसंग छिपल अछि कम उमेरमे पैघ बात बुझैक श्रेय।"

बिच्चेमे उमाकान्त बाजल-

"काका, एना नइ घुरिया कऽ कहियौ सोझुका बात कहियौ।"

समगम होइत दिवाकान्त काका बजला-

"बौआ उमा, जाधैर केकरो अपन उचित उमेर रहल ताधैर ओ बढ़ैत-बढ़ैत फुनगी तक पहुँच गेल। ओतैसँ माने फुनगीए-परसँ चोरौलहा उमेर आबि खसैए आ पदो-प्रतिष्ठा आ दरमहो पबैत रहैए।"

बिच्चेमे उमाकान्त टोकारा भरलक-

"ओऽ ऽ ऽ!"

उमाकान्तक 'ओ' सुनि दिवाकान्तकेँ जेना अपन 'म' जगलैन तहिना बजला-

"बौआ, अखन तूँ दुनियाँक छकल-बकल नइ बुझि रहलह अछि, तँए अन्हराएल बुझि पड़ैत हेतह। मुदा से नइ, लोको ते लोको छी किने, केतौ मरद लोक बनल रहैए आ केतौ घरवाली बनि मौगी बनि जाइए। जखने मौगी बनैए तखने ने ओ मौगियाह पुरुख बनि, एकसँ अनेक बिआह करैए।"

बिच्चेमे उमाकान्त टिपलक-

"काका, कनी दोहरा कऽ कहियौ, नीकसँ नइ बुझलौं।"

धारक बहैत पानि जहिना पोखैर-इनारक असथिर पानिक सुधि बिसैर गंगा सागर दिस बढ़ैत रहैए तहिना दिवाकान्त काका दुनियाँक सभ सुधि बिसैर बजला-

"बौआ, बेसियो उमेरबला सभ पाकल केश रंगा, पाथरक दाँत बना मोछ कटा कऽ नव कवरिया जकाँ अपनाकेँ जुआन कहि केतेको बिआह कऽ लइए।"

मुस्की दैत उमाकान्त बाजल-

"बेस बात काका कहि देलौं।"

अपन विचार जहिना दोसर बुझि कऽ मानि लइए, तैकाल जे खुशी बजनिहारकेँ होइ छै तहिना दिवाकान्तो काकाकेँ भेलैन। अठनियाँ हँसी हँसैत बजला-

"बौआ, उमेर चोरा लोक कमे उमेर कहि बड़का उमेरबलाक कान काटि कहिते अछि किने जे हम एतबी उमेरमे एते पढ़ि-गुनि नेने छी। उमेर रहत पचास बर्खक आ कहत जे बारहे बर्खमे माता सरस्वती हमरा सपनौती विद्या देने छैथ।"

किछु खेलाक पछाइत आकि पीलाक पछाइत जहिना मन भरि जाइ छै, अघा जाइ छै तहिना उमाकान्तोकेँ भेल। बाजल-

"काका, जलखै बेर भऽ गेल। भुखक तरास जगि रहल अछि। दोसर दिन आरो सुनब।"

दुनू हाथसँ उमाकान्तकेँ असथिर करैत दिवाकान्त काका कहलखिन-

"जलखै-बेर भऽ गेल तँ की हेतै, हमहूँ सभ अन्ने खाइ छी।"

पुतोहुकेँ सोर पाड़ि कहलखिन-

"जलखैयोक ओरियान करब।"

दिवाकान्त कक्काक आग्रह सुनि उमाकान्त बाजल-

"काका, जखन अहाँ अपन पेटक बात कहऽ चाहै छी तँ हमहूँ कहै छी दोहरा कऽ समए नै लगाएब, सभ बात बुझिये लेब।"

दिवाकान्त कक्काक मनमे ऐगला बात जेना उत्फाल मचबऽ लगलैन तहिना भेलैन। बजला-

"आलतू-फालतू बात छोड़ह ऐगला बात कहै छिअ।"

'ऐगला बात' सुनि उमाकान्तो अपन पियासल आँखि दिवाकान्त कक्काक आँखिपर देलक। आँखि-सँ-आँखि मिलिते दिवाकान्त काका बजला-

"पड़ोसिया गामक भाग्य जगल। एकटा कौलेज खुगल। ता हेमकान्तो आ हमहूँ- दुनू गोरे एम.ए. पास कऽ नेने रही। हेमकान्त धुड़फन्दा लोक सभ दिनक, अगुआ कऽ कौलेजक हेड प्रोफेसर भऽ गेल। पाछूसँ हमरो बहाली भेल। सातम नम्बरक प्रोफेसर हमहूँ भेलौं। भगवानो ओकरे दहिन भेलखिन। दरमाहाक संग मुफतिया मालक जोगार सेहो कऽ देलखिन। उमेर तीन साल घटाइए नेने रहए, अपन सिहन्ता हम मनेमे मारि लेलौं, जे ई जिनगी इन्चार्य बनै-जोकर नइ अछि। तरे-तर मनक त्रिवेणी-घाट मरने-घाट बनि गेल।"

मनक उमकी उमाकान्तक जगि गेल। बाजल-

"काका, अनेरे केहेन लोकक जड़ि बीटियबै छी! छोड़ू, औझुका बात सुना दइ छी।"

दुनू हाथसँ उमाकान्तकेँ रोकैत दिवाकान्त काका बजला-

"भने अखैन तोहूँ छहे, विचारेक बात अछि। ई कहऽ जे खोज-पुछारि करऽ जाइ की नहि। अपराधीक हार होउ कि जीत, खोज-पुछारि की करत से के कहलक।"

'विचार' सुनि उमाकान्त ठमकऽ लगल। उमाकान्तकेँ ठमकैत देख दिवाकान्त काका बजला-

"बौआ, बरियातीक बात कहि दइ छिअ।"

उमाकान्तक मनमे भेल जे भरिसक फेर रजनी-सजनीक खिस्सा जकाँ सात दिन लगौता। तँए बिच्चेमे बाजल-

“बरियातीक बात छोड़ि दियौ काका, ऐगला कहियौ।”

उमाकान्तकेँ बिच्चेमे अँटकबैत दिवाकान्त काका बजला-

“बौआ, हेमकान्तक दोसर बिआह केना भेल से बुझल छह?”

ई प्रसंग सुनि उमाकान्तक जिज्ञासा जगल। बाजल-

“बेसी तेलिया-फुलिया कहैमे नइ लगाएब। सोझ-साझ कहियौ।”

खखास करैत दिवाकान्त काका कहऽ लगलखिन-

“बिआह होइले गेल शिलाकान्तक आ भऽ गेल शिलाकान्तक बापक।”

कहि देवकान्त काका मुस्कुराए लगला। मकै आकि धान जहिना खापरिमे पहिने चनकैए तखन दोसर-तेसर रूप बदैल लाबा बनैए तहिना दिवाकान्त कक्काक चनकी उमाकान्तक मुँहकेँ लाबा बना देलक। हँसैत उमाकान्त बाजल-

“काका, कुमरम किनकर भेल रहैन?”

जहिना हँसी उमाकान्तक तहिना बतीसो दाँतक बतीसोअना हँसैत दिवाकान्त काका कहलखिन-

“कुमरमेटा केँ की कहै छहक जे तेरह लाख रूपैओ बेटेक नामसँ बैंकमे जमा भेल।”

‘तेरह लाख रूपैआ’ सुनि जेना उमाकान्तक मनमे औझुका घटना नाचि उठल। बाजल-

“ई केना भेल?”

दिवाकान्त-

“ई भेल जे सिनूरदानक समए शिलाकान्त रूसि रहल। सिनूरदान

करैले तैयारे ने भेल। हेमकान्तकेँ बजा आँगन लऽ गेलैन। चालू-पुरजा लोक हेमकान्त सभ दिनक, सिनूर उठा कन्याक माङ्मे लगबैत बाजल-

'बेटा नइ सिनूरदान करत तँ बेटाक बाप करत!'

..अपन चलाकी सुतारै दुआरे हेमकान्त जोर-जोरसँ चारि-पाँच बेर बाजिते रहल।"

क्षुब्ध होइत उमाकान्त बाजल-

"काका, कनी सोझरा कऽ कहियौ।"

अपन भारीपन देख दिवाकान्त काका आगूक बात बाजऽ लगला-

"बौआ! ओना, हम सभ कौलेजक आठ-नअटा शिक्षक एकठाम बैसकरखानामे रही। आँगनमे गल-गूल भेल। किछु गोरे, शिक्षकोमे सँ आ किछु परिवारो-समाजक बरियाती आँगन गेला, एक स्वरसँ सभ कहि देलखिन जे बिआह हेमकान्तेक भेलैन। कोनो पहिलुका रचल रचना छलै कि अनहोनी से अखनो धरि नइ बुझि पेलौं अछि।"

जिज्ञासा करैत उमाकान्त बाजल-

"लड़की केना राजी भेलैन?"

दिवाकान्त-

"लड़कीकेँ कि विचारैक पलखैत भेटल। तीन-चारि दिन विधि-बेवहारक होहामे बीति गेल। जाबे कन्याक मन थीर भेलैन, ताबे तँ शीलहरण भेल कन्याक विचारो-हरण ने भऽ जाइए।"

नमहर साँस छोड़ैत उमाकान्त बाजल-

"काका, वएह तेरह लाख रूपैआक लेनी-देनीक झंझट दुनू बापूत-हेमकान्त-शिलाकान्तक बीच भेल। धचगर बेटा एक्के बाँसक टोन तेना कपारपर मारलकैन जे बिच्चे–बीच ढाहियो देलकैन आ तरे-तर थौकचो केने छैन।"

नमहर निसाँस छोड़ैत दिवाकान्त काका बजला-

"जेकरा खोज-पुछारि करऽ जाएब ओ तँ भइये गेल। केते दिन जीब, आब किए मन मोलि करब।"

❑ साभार : मधुमाछी

हेराएल जिनगी

अंगरेजकेँ देशसँ भगला पछाइत दस सालक बाद कमलपुर गामक कल्याण कक्काक परिवारमे हीराननक जन्म भेल। तेसर बेटाक रूपमे हीरानन छल, तइसँ जेठ बौआनन आ हेरानन छल।

सौन मासक सुहावन समय, तैपर समगम मौसम। समगम मौसमक माने भेल- ने अधिक पानि भेने दहार आ ने नइ पानि भेने रौदी। ओना, दुनू परानी कल्याण कक्काक मनमे रहैन जे ऐबेर बेटी हएत। तँए दुनू परानी आपसमे विचारि नेने छला जे बेटीक नाओं 'बुधियारि' राखब। मुदा से भेलैन नहि। दुनू परानीक मनमे रहैन जे भगवान सभकेँ बेटा-बेटी दइते छथिन तँए दूटा बेटा देलैन आ तेसर बेटी देता...। ओना, भगवानोक नेत एकरंग नहियेँ छैन। केकरो घर भरि बेटा दइ छैथ तँ केकरो घर भरि बेटीए दइ छैथ। मुदा ईहो दोख तँ हुनका नहियेँ देल जेतैन जे एकरंग बँटवारा करैत जेते बेटा तेते बेटियो नइ दइ छथिन। सेहो दइते छथिन। माने चारि सन्तानमे दू बेटा, दू बेटी सेहो दइते छथिन।

हीराननक जन्म भेने दुनू परानी कल्याण कक्काक मनमे ओतेक खुशी नइ भेलैन जेते पहिल बेटा भेने वा दू-चारि बेटीक पछाइत बेटा भेने होइ छइ। तैसंग दुखो ओते नहियेँ भेलैन जेते बेटी-पर-बेटी होइत गेलासँ होइए। किछु भेल तँ बेटे भेल किने। दुनियाँमे के एहेन अभागल अछि

जेकरा बेटा आ सम्पैत अधला लगै छइ। मुदा गामक जनिजातिमे तेसरे हवा चलि रहल छल। ओ चलि रहल छल जे भगवन्ताकेँ भदबारिमे महींस बिआइए आ अभगलाकेँ बोहु...। भदबारि भादो मास भेल। किएक तँ बर्खाक शुरू मास 'सौन' भेल, भादो ढेनुआर भेल आ आसीन उतार। अखन साउने छी। ओना, बरखा सेहो हेबे करैए मुदा ओ होइए गोटि-पङ्गरा। झड़ी जकाँ सदिकाल झड़झड़ाइत नइ रहैए। तइले भादो अछि। मुदा तहूमे ई निसचित रूपे नहियेँ कहल जा सकैए जे झड़झड़ेबे करत। किए तँ जेना कालिदास मेघकेँ दूत बना अखाढ़ेमे पठबै छैथ तेना पठौलासँ सौनो भादव जकाँ बिचले मास भेल, तँए भदबारि जकाँ झड़झड़ाइयो नइ सकैए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। खाएर जे होइए ओ साल-सालक किरदानीक खेल छी। ऐबेर से नइ भेल। ऐ बेरक सौन कालिदासक अखाढ़केँ जन्म मास नहि मानि अपने जन्ममास बनि गेल।

समगम सुहावन सौन मासक सतमीकेँ हीराननक जन्म भेल। ओना, धानक खेती अदहासँ बेसी गाममे भाइयो गेल छल आ जे बाँकी अछि ओहो लगले-सुढ़िमे आठ-दस दिनक पछाइत भऽ जाएत। नीक समय भेने धानक बीरार नीक जकाँ उमझल अछि। रोगो-वियाधि बिआमे नइ अछि आ जर्मिनेशनो नीक भेल तँए बीआ पुरहगर अछिए। तँए जहिना खेतबला-सभकेँ खुशी तहिना खेती लगौनिहारो-सभकेँ खुशी छइहे। ई तँ भेल खेती-खोलाक उपजा-बारीक गप मुदा मनुखक उपजा-बारीक की स्थिति अछि तइ दिस ने देखब। किए तँ मनुखो तँ अही माटि-पानिक ने उपज छी।

दस बर्ख अजादीक भऽ गेल, गुलामीक पंजासँ निकैल स्वतंत्र हवाक साँस देशो लेलक आ देशवासी सेहो लेलैन। तहूमे अजादी लेनिहार सेनाक संख्यामे दू-चारि प्रतिशत घटबी किए ने भेल हुअए मुदा छियानबे-अनठानबे प्रतिशत तँ जीवित छथिये, जिनका मनमे अखनो ई बसले छैन जे अजादी पबिते–माने गुलामीसँ मुक्त होइते, धुआँ-धार

देशोक कल्याण हएत आ देशवासीक सेहो। तइले अपन आँट-पेट देखलासँ ने भाँजपर चढ़त।

देश आ देशवासीक प्रश्न अछि तँए आनो-आनो गुलाम देश, जे स्वतंत्र भेल, ओ पहिने केहेन स्थितिमे छल आ स्वतंत्र भेला पछाइत साले-साल कोन रूपमे आगू बढ़ल आ दस बर्खक अजादीक पछाइत केतेपर पहुँचल। ई तँ भेल एक देशकेँ दोसर देशक तुलना, मुदा एक-एक देशवासीक जिनगीक तुलना करब जँ छोड़ि देब तखन तँ जड़िये हेरा जाएत! एक-एक जन मिलि ने देश ठाढ़ केने छी आ ओइ बीच अपनाकेँ ठाढ़ करैत आगू-मुहेँ, अजादीक दिवाना जकाँ, कदम-कदम बढ़ैक परियास कऽ रहल छी। तइमे के केतए ठाढ़ छी से जँ नइ देखब तखन तँ अनेरे ने दिशाहीन देखबक संग मुँह ताकब सेहो हएत। जखने मुँहतक्की भेल तखने ने मनुखक कदम, कदमक गाछ जकाँ छुच्छे जमीनपर ठाढ़ भऽ सुखि-सुखि-टुटि-टुटि कऽ झड़ैत-झड़कैत रहब। जखन से भेल तखने ने गति मत हति मन बति जाएत?

कल्याण कक्काक परिवार दस बीघा जमीनबला, गामक मध्यम किसान परिवार छैन। मध्यम श्रेणीक परिवार दुनू मानेमे छैन। सम्पैतिक मानेमे सेहो आ जातिक मानेमे सेहो। सम्पैतिक मानेमे ई जे पान साए परिवारक गाममे पौने चारि साए परिवार सम्पैत-विहीन अछि। जइमे किछु गोरेकेँ बाड़ीक संग घराड़ियो छैन, किछु गोरेकेँ घराड़ीए-टा छैन आ किछु गोरेकेँ सेहो ने छैन। तहिना किसानोक परिवार अछि। पाँच गोरेकेँ बीस बीघासँ ऊपर खेत-पथार छैन आ बाँकीकेँ बीस बीघासँ निच्चाँ छैन। ओना, ओहू पाँचो परिवारमे–माने जिनका बीस बीघासँ ऊपर खेत-पथार छैन, पाँचोकेँ पाँच रंग सम्पैत छैन। तीन गोरेकेँ बीस-तीस बीघाक बीच खेत छैन, बाँकी दूमे एक गोरेकेँ साए बीघासँ ऊपर आ एक गोरेकेँ साए बीघाक निच्चाँ छैन। तहिना बीस बीघाक निच्चाँ जे परिवार अछि, ओइमे खाली पाँचेटा परिवार ओहन अछि जे हालेमे भिनौजी भेने दुनू तीनू

भाँइक बीच एकरंग जमीन छैन बाँकीकेँ सभरंग। ओना, ओहूमे तीन रंगक किसान भेला। जेठरैयत, मध्यम आ सीमान्त। माने जिनका दस बीघासँ ऊपर जमीन छैन ओ जेठरैयैत किसान भेला, दस बीघासँ कम आ चारि बीघासँ ऊपरबला मध्यम किसान भेला आ चारि बीघासँ कमबला सीमान्त। तैबीच एकटा बात ईहो तँ अछिए जे पैघ किसान माने बीस बीघासँ ऊपरबलाकेँ समांगो बेसी छैन सेहो नहियेँ छैथ। समांगक हिसाबसँ सेहो परिवार सभ गजपट अछिए। बेसियो सम्पैतबलाकेँ समांग कम छैन आ कम्मो खेतबला वा बिनु खेतोबलाकेँ समांग बेसी अछिए।

जहिना कल्याण कक्काक परिवार सम्पैतिक हिसाबसँ मध्यम परिवार छैन तहिना जातियोक हिसाबसँ मध्यमे परिवार छैन। ओना, मोटा-मोटी तीन रंगक जाति समाजमे अछि। पहिल ऊँच जाति, दोसर मध्यम जाति आ तेसर नीच जाति। ऊँच जाइतिक बीच सेहो केते रंगक भेद-भावक दूरी अछिए। जे खेनाइ-पीनाइसँ लऽ कऽ कथा-कुटुमैतीमे स्पष्ट झलैक जाइए। तैसंग जीविको आ बेवसाइयोमे सेहो झलैकते अछि। तहिना मध्यम परिवारक बीच सेहो अछिए। ओना, आर्थिक रूपमे जे मध्यम छैथ ओ जाइतिक रूपमे सेहो ऊपर-निच्चाँ भइये गेल छैथ। गाममे मध्यम परिवारक संख्या जहिना आर्थिक रूपे तहिना जाइतिक रूपे बेसी अछिए। से दुनू रूपमे- आर्थिको रूपमे आ जाइतिक बेवहारक रूपमे सेहो।

तेसर जे सम्पैतियोक रूपे आ जातियोक रूपे छैथ ओ जाइतिक रूपे नीच जाति, हरिजन वा अछोप जहिना कहबैत छैथ तहिना आर्थिक रूपे सेहो बोनिहार वा मजदूर वा सर्वहारा सेहो कहैबते छैथ। ओना, ओहू बोनिहार-मजदूर वा सर्वहाराक बीच सेहो एकरूपता नहियेँ अछि। जाइतिक जे ऊँचपन-नीचपनक आड़ि अछि ओ टुटि कऽ एकबट्ट भइये गेल अछि। ऊँचो जातिमे बोनिहार-मजदूर छैथ आ मध्यमो तथा नीचलो जातिमे सम्पैतिक हिसाबसँ अगुआएलो किसान-सभ छथिए।

नीच जाति, माने अछोप-हरिजन जाइतिक बीच सेहो अनेको जाति आ अनेको धर्म अछि जइमे सभ बँटाएलो छथिए। ओना, बेवहारो आ बेवसायमे सेहो बँटाएल छथिए। खाएर जे छैथ, मुदा एते तँ स्पष्ट पहचान अछिये जे जीवन-मरणमे सेहो एकरूपताक संग बहुरूपता सेहो अछिए। एकरूपता भेल ई जे एक जाइतिक भोजो-भात आ कथो-कुटुमैती ओहीक बीच होइए। ओना, बीचमे ई दीगर भेल जे नीच जाइतिक सम्बन्ध उच्च जातिसँ नइ अछि वा मध्यम जातिसँ नहि अछि, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। सेहो अछिए, जइसँ जीवन-मरणमे संगी बनियेँ जाइ छैथ। ओना, जीवन-मरणमे संग पूरब समाजिक भेल, जैपर समाज ठाढ़ भऽ आगू-मुहेँ बढ़त, मुदा एहेन सम्बन्धक बीच सेहो केतेको दराइर अछिए। आर्थिक सम्बन्ध रहितो समाजिक बेवहारमे दूरी बनलो अछि आ दिन-दिनक चहल-पहलक हवामे बनियोँ-बिगैड़ रहल अछि।

गाम-गामक अपन-अपन माटियो-पानि एक गामसँ दोसर गामक बीचक दूरी सेहो बनौनहि अछि। बजैक क्रममे सभ मिथिलेक गाम भेल आ एके जिला-जबारक सेहो भेल, मुदा कोनो गामक माटि बेसी उर्वर अछि आ कोनो गामक उस्सर। आ तैसंग एहनो तँ अछिए जे या तँ बाउलसँ बलुआएले अछि वा ऊससँ ऊसराहे अछि। तँए, कोनो गाम बारहो मास फलो-फूल आ अन्नोक उपजसँ सम्पन्न अछि आ कोनो गामक बालुक रेतसँ रस्तो-पेरा बन्न अछि आ उपजा-बारीक तँ बाते नहि..!

ई तँ भेल मिथिलाक माटिक सम्बन्ध। मुदा पानियोक सम्बन्ध एके-रंग अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। कोनो गाममे धारक छुतियो ने अछि आ कोनो गाममे सत-सतटा धार बहैए। सभ रंगक माटि-पानि रहने सभ रंगक भौगौलिक रूप सभ गामक बनले अछि। ऐठाम एकटा बात आरो अछि, ओ ई जे एक-दोसर पड़ोसी गाम जे अछि ओ ओहन नहियेँ अछि जइमे एक गाममे सत-सतटा धार बहैए आ दोसर गाममे धारक छुति नहि। इलाका-इलाकाक बीच एकरंगाह सम्बन्ध सेहो

अछिए।

कमलपुर ओहन गाम अछि जइमे धार-धुर तँ नहि अछि मुदा माटियोक सेखी नीक नै छइ। तेकर कारण अछि कमलपुरक बगलेक गाम होइत एकटा बरसाती धार बहैए। बरसाती धार भेल जे बरखा भेला पछाइत धार होइत पानि बहने जीवित (जीयाल) धार बनि जाइए आ बरखा सटकने धारक गति सटकए लगैए आ सटकैत-सटकैत सुखि जाइए। मुदा जे होइए, एते तँ कमलपुरकेँ केनहि अछि जे भदबारिमे बाढ़िक रूप बना कमलपुरोक खेतक रस चुसि, उर्वरा शक्तिकेँ धोइ-पोछि शक्तिहीन बना देने अछि। ओना, कोनो-कोनो गामकेँ बाढ़ि पाँक आनि जोरगर सेहो बनैबते अछि। मुदा से कमलपुरमे नहि अछि। जहिना कमलपुरक माटि शक्तिहीन अछि तहिना पानिक समुचित बेवस्था नइ रहने सेहो उस्सर जकाँ अछिए।

हजार बीघामे पसरल कमलपुर गामक खेती-बाड़ी सोल्होअना बर्खापर आश्रित अछि। ने गाममे नहर पानिक बेवस्था अछि आ ने एकोटा बोरिंग। बरखोक हिसाब ओहन नहियेँ अछि जे सभ साल नियमित रूपसँ एकरंग बरसबे करत, जइसँ किसान अपन मनक आँकड़ा–खेती करैक तरीकाक संग ओकर उपजो–ठीक-ठीक बैसा करत। गोटे साल खूब बरखा भेने गाममे दहार भऽ जाइए आ गोटे साल कम बरखा भेने रौदी सेहो भइये जाइए। तैसंग कोनो साल समुचित बरखा भेने नीक ऊपज नइ होइए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

गामक भौगौलिक बनाबट सेहो एकरंग नहियेँ अछि। आधासँ बेसी जमीन नीचरस अछि। जइमे अधिक बरखा भेने वा बाढ़ि एने छह-छह मास तक पानि बसल रहैए। ओहू पानिक एक हिसाब नहियेँ अछि। खेत-पनियासँ लऽ कऽ भरि डँरपनियाँ तक भऽ जाइए। 'खेतपनियाँ' भेल जे जइ खेतमे ओतबे पानि रहल जइसँ धानक उपज भऽ गेल। ओना, धानेटा ओहन अन्न अछि जे पानिमे उपजैए। आन-आन अन्नकेँ हालेटा

चाही, जमकल पानि नहि चाही। जखने खेतमे पानिक जमाव हएत तखने ओ फसल नइ उपजत।

मोटा-मोटी कमलपुर गाम ओहन अछि जइमे सोल्होअना खेतिये-बाड़ीपर निर्भर अछि। जे कि गोटे-गोटे साल उपजा-बारी नीक होइए, नहि तँ धारे-कोन खेतियो होइए आ धारे-कोन उपजो होइए। 'धार-कोन' भेल, सोलहअनाक बदला चौदहअना, बारहअना, आठअना, चारिअना। सोलहअना खेतियो आ सोलहअना उपजो नइ भेने गामक जे सम्पैत अछि ओ सोल्होअना उपयोगी नहियेँ भेल। सोल्होअना उपयोगीक अर्थ भेल जेतेक सम्पैत अछि आ ओकर जे उपजक रेशियो अछि तेते नइ हएब। खाएर जे अछि मुदा कमलपुरबलाक जीवनक तँ यएह आधार छिऐन।

कल्याण काकार्कें आठ बीघा जमीन पैत्रिक छेलैन आ अपन मेहनतक बले परिवार चलबैत दू बीघा आरो कीनलैन। जइ हिसाबसँ गामक किसानक जमीनक फेर-फार भेल तइ हिसाबसँ कल्याण कक्काक नहि भेलैन। फेर-फार भेल, मलगुजारीक अभावमे जमीन निलाम हएबक संग बर-बेमारी, पढ़ाइ-लिखाइक संग बिआह-दानमे बेचब-बिकनब। आठ बीघा जमीन जे कल्याण काकार्कें छेलैन ओ ऊँचाइ-नीचाइक हिसाबसँ तीन मेलक छेलैन। किछु नीचो छेलैन, किछु मध्यमो छेलैन आ किछु ऊँच-उपराइर सेहो छेलैन। जइसँ एते लाभ होइते छेलैन जे जइ साल रौदी भेल तइ साल नीचला खेतमे नीक उपज भऽ जान्हि आ जइ साल दहार भेल तइ साल ऊपरका खेतमे नीक उपज भऽ जाइ छेलैन। समटल परिवार, सभ अपन-अपन किसानी जिनगीसँ जुड़ि मेहनत करै छला आ बिना कोनो बाहरी दाब-चापसँ स्वतंत्र जिनगीक परिवार बना जीबैत आबि रहल छला।

कल्याण काका अपने साधारण पढ़ल-लिखल लोक छला। किताबो पढ़ि लइ छला आ नाम-गामक संग जोड़-घटाउ, गुणा-भाग सेहो

भऽ जाइ छेलैन। जइसँ खेतोक नाप-जोख आ अनो-पानिक तौल-जोख कइये लइ छला। अपन पढ़ब-लिखब कल्याण कक्काक मनकेँ एते आकर्षित कइये नेने छेलैन जे पढ़ाइ-लिखाइकेँ परिवारक अनिवार्य काज बुझै छला। दुनू शासनक– अंग्रेजी शासनसँ लऽ कऽ देशी शासनक बीचक सीमापर कल्याण कक्काक जिनगी रहलैन। माने उतरैत अंग्रेजी शासन आ चढ़ैत देशी शासन। जइसँ देशक गुलामीक संग स्वतंत्र जिनगीक बीचक जिनगी कल्याण कक्काक रहबे केलैन। ओना, स्वतंत्र जिनगी लोक अपने निर्माण करै छैथ, मुदा तइमे बाहरी प्रभाव–माने शासनक प्रभाव नहि पड़ैत अछि, सेहो कहब अनुचिते हएत। शासने-सूत्रसँ सत्ता चलैए आ ओही सत्ताक बीच जीवन चलैए। ओही जीवन-जापनक बीच परिवार अछि। जे वंशगत आधारपर ठाढ़ होइत आबि रहल अछि। परिवारक अर्थ भेल देशक सभसँ छोट अंग– माने सभसँ छोट संस्था, जेकर संचालन-सूत्र परिवारे-जनक ऊपर रहितो अछि आ रहितो आबि रहल अछि।

1947 इस्वीसँ पूर्व कल्याणपुरमे लोअर प्राइमरी स्कूल मात्र छल। ओना, किछु परिवार एहेन जरूर छल जे खानगी पढ़ाइक बेवस्था अपना दरबज्जेपर केने छला आ किछु गोरे अपन धिया-पुताकेँ बाहर भेज पढ़ौलैन, मुदा ओ गोटि-पङ्गरा परिवार छल। गामक हिसाबसँ माने समाजिक रूपमे सिरिफ एकटा लोअरे प्राइमरी स्कूलटा छल। कमलपुरसँ कोस भरि हटल, दोसर गाममे मिडिलो स्कूल, हाइयो स्कूल आ संस्कृत महाविद्यालय सेहो छल।

देश स्वतंत्र भेला पछाइत कल्याणपुरमे सेहो मिडिल स्कूल खुजल। जइमे चारि क्लासक पढ़ाइ शुरू भेल। चौथासँ लऽ कऽ सतमा धरि। चौथा-पाँचमामे विद्यार्थीकेँ फीस नइ लगै छेलै आ छठमा-सतमामे अढ़ाइ रूपैआ महिनाक हिसाबसँ फीस लगै छेलइ। जे सातम दशकमे बन्न भेल। बिहारमे जनवादी सरकार बनला पछाइत हाइयो स्कूलक फीस बन्न भेल,

जइसँ मैट्रिक तकक शिक्षा सभकेँ उपलब्ध भेल।

कल्याण कक्काक पहिल आ दोसर बेटा, माने बौआनन आ हेरानन हाइ स्कूल तक जरूर पहुँचल मुदा मैट्रिक पास नइ केलक। एगारहम क्लास मैट्रिक होइ छल, जइमे दू सालक सिलेबस रहइ। माने दसमा-एगारमाक एक्के सिलेबस रहइ। दसमा तकक परीक्षामे विद्यार्थीकेँ नहि रोकल जाइ छल, माने फेल नइ कएल जाइ। एगारहमाक परीक्षा सरकारक अन्तर्गत होइ छल, जे साले-साल होइ छल। नअ विषयक पढ़ाइयो आ परीक्षो होइ छल। नम्बरक हिसाबसँ श्रेणीक बँटबारा छल। नअ रंगक नअटा विषय छल जइमे एक्को विषयमे फेल केने विद्यार्थी फेल होइ छल।

पाँच बर्खक हीरानन जखन गामक स्कूलमे प्रवेश पेलक तखन आन-आन विद्यार्थीसँ नीक वातावरण परिवारमे भेटलै। नीक वातावरणक माने भेल जे अधिकांश लोकक परिवार ओहन छल जइमे शिक्षाक प्रवेश नइ भेल रहइ। मुदा हीराननकेँ से नहि, साक्षर पितो आ जेठ दुनू भाइयो परिवारमे रहथिन। ओना, कल्याण काका जहिना बौआनन आ हेराननकेँ अक्षर-अंकसँ लऽ कऽ किताब पढ़नाइ सिखेलखिन तहिना हीराननकेँ सेहो सिखौलैन। जइसँ स्कूलमे हीरानन आन विद्यार्थीक अपेक्षा तेजगर-बुधिगर छल।

मिडिल स्कूलक अन्तिम परीक्षा तकमे हीरानन प्रथम होइत रहल। हाइ स्कूलमे प्रवेश पबिते, पाँचटा मिडिल स्कूलसँ आएल पाँचटा प्रथम विद्यार्थीक बीच हीरानन आबि गेल। ओना, हाइ स्कूलक फीस जहिना समाप्त भेल तहिना अंग्रेजी विषयकेँ सेहो कम कएल गेल। अधिक-सँ-अधिक विद्यार्थी अंग्रेजीमे फेल करै छल। एक तँ विदेशी भाषा-साहित्य, दोसर बाल-मनक ऊपर आरो-आरो विषयक दाब छेलैहे। तइ बीच एकटा आरो भेल, ओ भेल परीक्षामे चोरीक आगमन। माने चीट-पुरजीसँ देख कऽ लिखब।

ओना, अंग्रेजीक पढ़ाइ हाइ स्कूल (आठमा) सँ शुरू होइ छल, मुदा तेकरा पाछू घुसका मिडिल स्कूलमे सेहो आनल गेल। माने छठा क्लाससँ अंग्रेजी शिक्षा शुरू भेल। भाषा आ विषयक समस्या हाइ स्कूलमे जबरदस छल। जहिना भाषा-साहित्यक रूपमे अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, मैथिली छल तहिना विषयक रूपमे आर्ट-साइंस-कामर्सक अनेको विषय सेहो छेलैहे।

प्रथम श्रेणीमे हीरानन मैट्रिक पास केलक। तइमे किछु पढ़बोक जोग छेलै आ किछु चोरियोक। ओना, परीक्षामे केतबो चोरी किए ने बढ़ल मुदा तैयो प्रथम श्रेणीक रिजल्ट कमे होइ छल। दोसर श्रेणीक रिजल्ट बेसी होइ छल। कल्याण कक्काक परिवारमे पहिल-पहिल प्रथम श्रेणीमे उत्तीर्ण विद्यार्थीक जन्म भेलैन। तँए परिवारमे सबहक मन उत्साहित भइये गेल छेलैन। तैबीच शिक्षण संस्थानक क्षेत्रमे सेहो उछाल आएल। जेकरा हम सभ आइ मधुबनी जिला कहै छिऐ ओ दरभंगा जिलाक अनुमण्डल छल। साठिक अन्तिम दौर आ सत्तैरिक दशकक शुरूआती दौरमे शिक्षाक प्रति जागरणक एकटा नव रूप उभरल। जइसँ स्कूलोक संख्या बढ़ल आ कौलेजोक। स्वतंत्रतासँ पूर्व (1947) दरभंगा जिलामे मात्र दूटा कौलेज, एकटा दरभंगामे सी.एम.कौलेज आ दोसर मधुबनीमे आर.के. कौलेज छल, तइमे उछाल आएल। एकाएक चारिटा कौलेज– बाबूबरही, सरसो, झंझारपुर आ निर्मलीमे खुजल। ओना, क्षेत्रक हिसाबसँ निर्मली सुपौल जिला छी जे ओइ समय सहरसा छल।

विज्ञानक विद्यार्थीक रूपमे हीराननक प्रवेश निर्मली कौलेजमे भेल। घरसँ अढ़ाइ कोसपर कौलेज...।

हीरानन जखन हाइये स्कूलमे छल तखने बिआह सेहो नेपालक सप्तरी जिलामे भऽ गेल छेलइ। ओना, जइ इलाकामे हीराननक बिआह भेल ओ पहिने भारतेक सटल राज्य छल। जेकरा मिथिला राज्य कहल जाइए। ओना, ओहू समयमे आ अखनो किछु लोकक मनक धारणा

एहेन छैन्हे जे सम्पैतसँ अधिक महत शिक्षाकेँ दइ छैथ आ किछु लोकक एहेन धारणा छैन्हे जे सम्पैतकेँ अधिक महत दइते छैथ। मध्यम श्रेणीक परिवार रहने दुनू द्दष्ट्रिसँ, शिक्षो आ सम्पैतोमे नीक परिवार हीराननक छेलैन्ह। तँए अपनासँ बीस सम्पैतियो आ शिक्षोबला परिवारमे हीराननक बिआह भेल। ओना, मध्यमो आ ऊँचो परिवारमे एकटा जबरदस रोग प्रवेश कइये चुकल छल जइसँ स्वस्थ मनुखक निर्माणमे बाधा भेल। माने ई जे श्रमहीनता बढ़ल। नोकर-चाकर, जन-बोनिहारक हाथे खेतीसँ परिवार धरिक काज लेने रोग बढ़बे कएल।

बी.एस-सी. करैसँ पहिने हीरानन एम.एस-सी. करैक हिम्मत (साहस) तँ हारि चुकल छल मुदा एते मनमे आशा रहबे करै जे हाइ स्कूलमे सांइस टीचर बनबे करब। मुदा से भेलै नहि।

तैबीच पिताक मृत्यु माने कल्याण कक्काक, सेहो भऽ गेलैन आ परिवारमे तीनू भाँइक बीच भिनौजी सेहो भऽ गेलइ। दस बीघाबला किसान परिवारक हीरानन, साढ़े तीन बीघाबला भऽ गेल। हीरानन अपना हाथे कहियो खेती-बाड़ीक कोनो काज केने नहि, जन-बोनिहारक हाथे काज होइत आबि रहल छल, तैसंग जहिना हीराननक अपन जीवन-स्तर कौलेजिया विद्यार्थीक बनि गेल छेलै तहिना पत्नीक मनमे सेहो रंग-रंगक कामना छेलैन्हे। दुनू परानीमे किनको ओहन ऊहि नहि जागल छल जे मनुखक बुधि आ ओकर काजपर नजैर जाइत। गोबर-माटिसँ नीपल-पोतल जकाँ देखा-देखी समाजो आ परिवारोक सीख-लीख पकैड़ चलि रहल छल। तैपर मिथिलांचलक किसानक जिनगीक दुर्भाग्य रहल जे मौनसुन आधारित जिनगी रहल। जे कहियो बाढ़िक चपेटमे तँ कहियो रौदीक चपेटमे पड़ैत आबि रहल अछि।

एक बाढ़ि आ एक रौदीक माने साल भरिक रौदी, तहिना एक बाढ़िक माने ओहन बाढ़ि जइमे साल भरिक उपजा प्रभावित होइए, प्रभाव पाँच बर्ख धरि परिवारकेँ प्रभावित करैए। माने ई जे एक सालक

नोकसानकेँ पुरबैमे पाँच बर्ख लगि जाइए, तखन ओ पूर्ववत अवस्थामे अबैए। मुदा तइ बीच ईहो समस्या तँ अछिए जे पाँच बर्खक सुभ्यस्त (खुशहालीक) समय हएत तखन ने, जँ दोहरा गेल वा दोसर-तेसर साल फेर ओहन समस्या आबि गेल तखन तँ समस्या आरो जटिल भइये गेल।

ओना, एक सालक बाढ़ि-रौदीक चर्च भेल मुदा बाढ़ियो-रौदीक की कोनो आड़ि-धुर, सीमा-सरहद अछि, जे एतबे हएत। ओकरो रूप तँ साधारणसँ बिकराल धरिक अछि। माने छोट-बाढ़िसँ जहिना साल भरिक फसिल प्रभावित होइए तहिना एहनो बाढ़िक रूप तँ अछिए जे घरो-दुआर खसबै-दहबैए आ गाम देने धारो फोरि दइए। तहिना रौदियोक अछि। छोट रौदी भेने सालक उपजा जरैए आ नमहर भेने पोखैरो-झाँखैर सुखबैए आ गाछो-बिरीछ सुखैबते अछि।

समय बीतल। दुनू परानी हीरानन पचपन बर्ख टपला पछाइत बचपन दिस देखब शुरू केलैन। परिवारमे तीन सन्तान छैन। दू बेटी आ एक बेटा। जेठ बेटी, माझिल बेटा आ छोट बेटी छैन। जेठ बेटी बिआह करै-जोकर भऽ गेलैन। बेटा सेहो हायर सेकेण्ड्री पास कऽ लेलकैन आ छोट बेटी आठमामे पढ़ि रहल छैन।

दस बजेक समय। खेतसँ हीरानन आबि दरबज्जाक चौकीपर बैसला। हीयहारिणी सेहो आँगनसँ निकैल दरबज्जापर एली तँ पतिकेँ चौकीपर बैसल देखलैन। सहैट कऽ पतिक लग आबि बजली-

“मन बड़ खसल अछि?”

अपन परिवारिक स्थितिक बीच हीराननक मन बिचैड़ रहल छेलैन, जइसँ चेहराक ऊपरका सुर्खी मलिन भऽ गेल छेलैन। हीरानन बजला-

“मनेटा नहि परिवारो खसि रहल अछि..!”

ओना, हीरानन अपना विचारे माने पढ़ल-लिखल लोक जकाँ बाजल छला, मुदा पत्नी से नइ छथिन। साधारण नाओं-गाओं लिखै-पढ़ै

धरिक ज्ञान छैन। मुदा दुनूकेँ पचपन बर्खक जिनगीक अनुभव, एकटा नव रूपमे ज्ञानकेँ जगाइये देने छैन। हीयहारिणी बजली-

"से की?"

हीरानन बजला-

"आइ बुझि पड़ि रहल अछि जे आब जीब कठिन अछि।"

'जीब कठिन अछि' सुनि हीयहारिणी चौंकैत बजली-

"से की?"

नमहर साँस छोड़ैत हीरानन बजला-

"सुनीता बिआह करै-जोकर भऽ गेल जे अहूँ कहै छी, आ समाजोक लोक कहै छैथ आ करो-कुटुम कहिते छैथ।"

हीयहारिणी बजली-

"से तँ भइये गेल अछि।"

हीरानन-

"अपनो आँखि अछि, अपनो देखै छी। मुदा सोझे देखने थोड़े हएत। जे परिवेश बनि गेल अछि आ जे परिवार अछि तइमे दस लाखक काज भेल। तैसंग सुधीर सेहो कहैए जे एम.बी.ए.मे नाओं लिखाएब। केना पार लागत। लऽ दऽ कऽ साढ़े तीन बीघा खेत अछि। ओकरो मूल्य कमिये गेल अछि। किसान जगैत तखन ने किसानी जिनगी जगैत जइसँ खेतक मोल बढ़ैत, से तँ भेल नहि..!"

हीयहारिणी-

"तखन?"

हीरानन-

"तखन की, पाछू उनैट तकै छी तँ बुझि पड़ैए जे जिनगीए जेना हेरा गेल।"

पतिक बात सुनि हीयहारिणी किछु बजली नहि, मुदा जहिना सूर्यास्तक पछाइत अकासमे रंग-रंगक तरेगन उगए लगैए तहिना दुनूक मनमे रंग-रंगक विचार उठए लगलैन। जइसँ दुनूक मन अन्हार राति जकाँ सियाह होइत कारी-सियाह भऽ गेलैन।

❑ साभार : सुभिमानी जिनगी

करिछौंह मुँह

बरखा मौसम अबैसँ पहिने हल्ला भऽ गेल जे ऐ बेरक समय रौदियाह हएत। माने भेल जे उचितसँ कम बरखा हएत। केते कम हएत से तँ समय कहत। ओना, पतराबला सबहक विचार अलग छैन। हुनका सबहक विचारे अस्सी बिसबा पानि हएत। जइसँ धनमण्डल हएत। मुदा रेडियो टी.बी.सँ तेते हल्ला भेल जे पतराबला सबहक विचार दबि गेलैन। दबबो केना ने करितैन, एक तँ एक-आध पतरा देखनिहार गामे-गाम छैथ, तैपर मुँहक बोल मशीनक आगू केना बढ़त।

पनरह दिनक बरखा गामे उजाड़ि कऽ देलक। बाधक-बाध डुमि गेल। तहूमे भादोक डुमल। अहुना कहबी छै जे भादव धोइ किछ-किछ होय। सेहो पानिसँ ऊपर हएत तखन ने। जँ पानिक तरमे रहत तँ गलबे करत किने। बाध दिस टहलैले पनरह दिनसँ नै गेल छेलौं। जेबो केना करितौं टहलैए बेर बरखा हुअ लगै छेलइ। मुदा सोलहम दिन उगरास केलक। रौद भेल। रौद देख दछिनबरिया बाध दिस विदा भेलौं।

अपना टोलसँ निकैलते दोसर टोलक मुहेँपर गेलौं आकि सुवधी काकीक घर टगल देखलिऐ। चोंगरा सभ लागल रहइ। ओसाराक टाट खसल रहइ। रस्तेपर सँ हिया कऽ देखैत रही आकि सुवधी काकीपर नजैर पड़ल। आगू दिस ओहो बढ़ली आ हमहूँ बढ़लौं। घरक कोनचर लग

पहुँचते सुबधी काकीक चेहरापर आँखि पड़ल। करिछौन मुँह देख पुछलयैन-

“काकी, कहिया घरक ओसारी खसल?”

‘ओसारी खसब’ सुनि सुबधी काकीकेँ बुकौर लैग गेलैन। बजली-

“बौआ, अपन जान तँ बँचि गेल मुदा तीन मासक छागरक टाँग टुटि गेल। मनमे छेलए जे दसमीमे कहुना तँ दू हजारक चीज हएत। से बिलैट गेल।”

हम पुछलयैन-

“काकी, बिलैट केना गेल, देखै छी छागर जीविते अछि।”

काकी बजली-

“ओसारीक टाट तेना खसल जे छागरक टाँगे टुटि गेल। अवाह छागर थोड़े कियो चढ़बैले लेत।”

ई गप सुनि अपनो बुझाएल जे ठीके कहै छैथ...। मुदा किछु तँ बैजतौं, कहलयैन-

“अपन जान आ बकरीक जान बँचल तँ आगू केते छागर हएत, तइले दुख किए करै छी।”

काकी बजली-

“एकेटा दुख नै ने अछि, आमद चैल गेल, आ खरचा बढ़ि गेल। घर दुरुस ओहिना हएत। बिना बोइनक के घर मरम्मत करि देत।”

❑ साभार : लजबिजी

कियो ने पुछैए

एकतीस साल नोकरी केलाक बाद रामानन्द भाय घुमि कऽ गाम एला। एकतीस सालक बीच ए.एस.पी. सँ लऽ कऽ चारि मास आइ.जी.क पद सेहो सुशोभित केने छला। तैबीच ऑफिसक कर्मचारी जरूर बुझैन जे खिशियाह अफसर छैथ तँए काजमे कोताही केने बिगड़बो करता आ भऽ सकैए जे लाल कलम चला देता तँ नोकरियोमे जड़ब हेबे करत। किछु गोरे इमानदार सेहो बुझिते छेलैन। पचीस दिसम्बरकेँ रामानन्द भाय सेवा निवृत्त भेला आ अपन पेंशनक सभ काज सम्हारि दस जनवरीकेँ डेराक सभ वस्तु जात नेने पत्नीक संग गाम आबि गेला। तेसर दिन माने बारह जनवरीकेँ, भिनसुरका चाह पीब रामानन्द भाय अपन ऐगला जिनगीक विषयमे गौर करए लगला। तही बीच पत्नी-सुलेखा सेहो कोठरीसँ निकैल दरबज्जापर पहुँचली। पत्नीपर नजैर पड़िते रामानन्द भाय बजला-

“गामक कियो ने पूछ करैए..!”

ओना, सुलेखाक जे बीतल जिनगी छेलैन ओ तँ अफसर परिवारक रहैन तँए कोनो बात वा कोनो बेवहारकेँ देखै-बुझैक तरीका अप्पन बनि गेल छेलैन। जइ अनुकूल ओ बजली-

“अखन दुइये दिन एना भेल अछि तइमे केना ई बुझि गेलिऐ?”

अपन समझसँ सुलेखा बाजल छेली, मुदा सेवा निवृत्तिसँ पूर्वक विचार जिनगीक अनुकूल जहिना रहैए तहिना सेवा निवृत्तिक पछाइत मृत्युक सम्भावनासँ प्रभावित भेने जीवन-मृत्युक बीचक सम्भावनाक संक्रमण भेने अनुकूल विचार सेहो प्रभावित होइते अछि। जइसँ विचारमे किछु-ने-किछु संक्रमण होइते अछि। हेबो केना ने करत, जीता-जिनगी लोक दोसरक सहारा बनैए आ मृत्युक आगमन देख लोक दोसराक सहारा चाहिते अछि। तँए रामानन्द भाइक विचार पत्नीक विचारसँ सहमेलू नहि भऽ सहखेलू जकाँ बुझि पड़लैन। मुदा समस्या किछु हुअ आकि केहनो हुअ ओ तँ समस्याग्रस्त लोककेँ भोगै-विचारै पड़ैए।

रामानन्द भायकेँ पत्नीक विचारमे जे आसरस भेटक चाही से नइ भेटने मन थोड़ेक निरस जकाँ भइये गेलैन। मुदा जे विचार रामानन्द भाइक मनमे पनैप गेल छेलैन ओकर पेंपीकेँ ओतै रोकि, मनकेँ दोसर दिस बहटारैत बजला-

“जइ दिन गामसँ नोकरी करए विदा भेल रही ओ दिन आ आइ जखन नोकरी छुटला पछाइत गाम एलौं हेन तइमे केतेक अन्तर आबि गेल अछि से अनुमान करै छिऐ?”

पतिक बात सुनि सुलेखा थोड़ेक सिरसिरेली जरूर मुदा किछु लोकक एहेन सोभाव होइते अछि जे जहिना खुशी रहलापर बोली-वाणीक स्वर रहल तहिना नाखुशी भेलापर सेहो ओहिना रहल। सुलेखो तहिना अपन मुँह बन्न कऽ लेली, किछु बजली नहि। भऽ सकैए जे मने-मन गुड़-चाउर फाँकए लगल होइथ।

लक्ष्मणपुर गाममे पहिल-पहिल आइ.पी.एस. रामानन्द भाय भेला। ओना, पढ़ै-लिखैक खियालसँ लक्ष्मणपुर बहुत पछुआएल अछि। सोल्होअना बिनु पढ़ल-लिखल गाम नहियेँ अछि मुदा जनसंख्याक चौथाइयोसँ कम जरूरे अछि। पनरह-सँ-बीस प्रतिशत साक्षर पुरुख वर्ग

आ दू-सँ-पाँच प्रतिशत महिला वर्ग साक्षर अछि। रामानन्द भाय विद्यार्थीए जीवनमे लक्ष्मणपुरक वातावरणसँ अलग भऽ मात्रिकक वातावरणमे जा पढ़ला, बढ़ला आ पालल-पोसल गेला, जैठाम पढ़ाइ-लिखाइक औसत अधिक अछि आ तहूमे खासकए रामानन्द भाइक मामा-नानाक परिवार तँ आरो बेसी अगुआएल छेलैन। रामानन्द भाइक मामाक परिवारमे ई सातम पीढ़ी चलि रहल छैन जे पढ़ै-लिखैक धारासँ नीक जकाँ जुड़ल अछि। माने अक्षर-बोध आ अध्ययन बोधक सातम पीढ़ीक नम्बरपर रामानन्द भाइक मामा सभ भेलखिन। मामक चारि भाँइक भैयारी छैन। जे चारू चारि दिशाक अध्ययेता। किएक तँ हुनक पिता- रघुनन्दन बाबाक अपन खास सोच रहैन। रघुनन्दन बाबाक अपन खास सोच परिवारक खियालसँ रहल होनि वा समाजक जरूरतक खियालसँ जे चारू बेटा– रूपलाल, भूपलाल, दुखलाल आ सुखलाल–केँ चारि दिशाक अध्ययन दिस झुकौलैन, जइसँ एकटा बेटा किसानी ज्ञान, दोसर मशीनी ज्ञान, तेसर चिकित्सा आ चारिम वकालत दिस बढ़ला। किछु दिनक पछाइत चारिम बेटा- सुखलाल जिला जज बनला। वएह वातावरण रामानन्दकेँ भेटल छेलैन जइसँ आइ.पी.एस. बनला। ओना, लक्ष्मणपुरक अपन धरतीक उपज, माने शिक्षाक दौरमे एक गोरे मैट्रिक पास करि कोसी प्रोजेक्टक किरानी, दोसर मैट्रिक पास लोअर प्राइमरी विद्यालयमे शिक्षा मित्र आ तेसर बेकती बी.ए. पास केला पछाइत बेरोजगारे रहि गेल। वएह कलकत्तासँ दिल्ली तक घुमि-फीरि नोकरी नइ भेने सठिया-कठिया कऽ बी.एल.मे नाओं लिखौलक आ वकील बनि झंझारपुर कोर्टमे कार्यरत अछि। बाँकी गामक लोक छोट-मोट बेपारक संग खेती-गिरहस्ती करैए। तँए की गाममे सम्पन्नता नहि अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। झोरे छाप डॉक्टर किए ने हुअए मुदा लक्ष्मणपुरक डॉक्टर तँ वएह छी किने। जेकरा काजमे समाजक बिसवास छइ। भगवान रच्छ रखथुन लक्ष्मणपुरवासीकेँ जे टाटा हॉस्पीटल बम्बई आ

आयुर्वेद संस्थान दिल्लीक मुँह नहि देखए पड़इ। कियो सुखे थोड़े जाइए। दमकल-बोरिंगसँ लऽ कऽ ट्रेक्टर धरिक मिस्त्री, बिजलीक मैकेनिकक संग मोबाइलक मैकेनिक सेहो लक्ष्मणपुरमे अछिए। तौला-कराही बनबैबला माने बरतन-बासनक सृजनकर्त्ताक रूपमे कुम्हार-पण्डित सेहो अछिए। दुर्गा स्थानक दुर्गा माताक संग ब्रह्म स्थानक रेमन्तक संग घोड़ो गढ़बे करैए। तहिना केबाड़-चौकैठक संग चौकी आ सजल-धजन पलंग धरिक सृजेता कर्मकार कलाकार लक्ष्मणपुरमे नहि अछि सेहो केना नइ कहल जाए। तहिना काँच-कड़चीसँ काँच बाँसक फुलडालीसँ लऽ कऽ पनडालीक संग पतडालीक अतिरिक्त डाला-धनडाला तकक निर्माणकर्त्ता नइ अछि सेहो केना नइ कहल जाएत। जइ गाममे सभ कथुक सम्पन्नता रहत तइ गामकेँ जँ सम्पन्न नइ कहबै तँ ओइ गामक तौहीनक संग बेइमानी सेहो भेबे कएल किने। मुदा से बात नहि, गौंओं आ अनगौंओं सभ लक्ष्मणपुरकेँ सम्पन्न समाज मानिते अछि। जँ से नइ मानैत अछि तँ कियो अनगौंआँ किए अपन बेटी-बेटाक संग भाइयो-बहिनक बिआह लक्ष्मणपुरमे करैए। किनका मनमे एहेन इच्छा नइ रहै छैन जे अपन बहिन वा बेटीक जिनगी नीक जकाँ नहि चलए। ओना, जिनगियो-जिनगीमे अन्तर होइते अछि। एक्के गाममे एक परिवारक जिनगी खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ कपड़ा-लत्ता, घर-दुआरिक संग पढ़ै-लिखै तक सम्पन्न रहैए आ ओहीठाम माने बगलेमे, दोसरकेँ केकरो पढ़ै-लिखैक खर्च नइ जुटै छै तँ केकरो रहैक नीक घर नहि छइ। तहिना केकरो कपड़ा-लत्ताक अभाव अछि तँ केकरो खेबा-पीबाक। मुदा किछु अछि, गाम तँ सबहक छिऐन्हे। सभकेँ अपन-अपन अधिकारो आ कर्तव्यो छैन्हे। तइमे जे जेहेन विचारक छैथ ओ ओइ अनुकूल अपन परिवारक सिरजनो-प्रतिपाल करै छैथ आ नष्टो-संहार करिते छैथ।

आइसँ बतीस बर्ख पूर्व रामानन्द भाय जखन आइ.पी.एस. कम्पीट केलैन तँ गामक जेते बुझै-सुझैबला लोक छला सभ खुशीसँ झूमि उठल

छला। किनको झुमैक खुशी छेलैन जे गाम समाजक लोक उठि कऽ सत्ता तक पहुँचला, तँ किनको खुशी जे गाममे कोनो भीड़-कुभीड़ पड़त तेकर रक्षक गोबरधन धारी कृष्ण जकाँ अवतार लइये लेलैन। किनको मनमे खुशी ऐ दुआरे रहैन जे देखा-देखी दुनियाँ चलैए, जखने एक गोरे धरतीसँ उठि अकास छुबि लेलैन तखने दोसरो-तेसरो छुबे करत। आ किनको मनमे ई आशा छेलैन जे बिनु पढ़ल-लिखलकेँ ने नोकरी नइ भेटैए आकि नइ भेटत मुदा ओइ संग पढ़लो-लिखल जे टौआएल फिरैए कमसँ कम आब ओकरा सबहक बेरा पार हेबे करत। जखन एते पैघ डिग्री रामानन्द भाय हाँसिल केलैन तखने ने पैघ पदक प्राप्ति सेहो हेबे करतैन जइसँ दबल-कुचललकेँ लाभ हेबे करत।

रामानन्द भाइक पिता जनकनन्द साधारण पाँच बीघा जोत जमीनक गिरहस्थ, जिनका अपन होश-हवास एते नहि जे रामानन्द भाइक पदक गरिमाकेँ बुझितैथ मुदा सासुरक जे परिवार रहैन ओइसँ किछु-ने-किछु अंकैत तँ जरूर छेलाहे। बेटाक डिग्रीक खुशीमे समाजे नाचि उठल छल जइसँ जनकनन्द सेहो झूमि उठला। बेटाक प्रतिष्ठाक खुशीमे जनकनन्द समाजक संग कुटुम्बो-परिवारकेँ भोज खुएबाक विचार मनमे रोपि लेलैन।

ट्रेनिंग सम्पन्न केला पछाइत रामानन्द भाय गाम एला। परसू जुआइन करए जेता। बीचमे काल्हि भरि समय अछि। जनकनन्दकेँ भोज करैक अवसर भेटलैन। ओना, रामानन्द भाय पनरह दिन पहिनहि अपन कार्यक्रमक जानकारी पिताकेँ दए देने रहैन। भोजो तँ भोज छी, अपन-अपन गुण-धर्म तँ ओकरो छइहे। बिआहक भोज बरियातीक भोज भेल जइमे दू समाजक बीच मनुख-मनुखक कान्हक मिलानीक संग लड़का-लड़कीक बिआह होइत अछि। तँए ऐ भोजमे रस्सा-कस्सी सोभाविक अछि, जइसँ खेबा-पीबाक ओहन रूप पकड़बे करत। किए ने लोक (बरियाती) बाजत जे जहिना अँठियाहा रसगुल्ला छल तहिना लालमोहनो

आ डलनामे सेहो डलडेक छौंक पड़ल छेलइ। मुदा ओहीठाम श्राधक भोजक महात्म बदैल जाइए। बदलबो केना ने करत, जैठाम मृत-आत्माकेँ स्वर्ग-नर्कक भागी बनैक प्रश्न अछि तैठामक पंच जँ भोजमे तीमन-तरकारीक परिचय करए लगत तखन अनेरे ने भोजखौक सभ भेल-गेलमे ओइ आत्माकेँ नर्क पठौत। मुदा जनकनन्दक भोज तँ से छेलैन नहि, ओ तँ रामानन्द भायकेँ शुभकामनाक छेलैन। तँए ऐठाम जँ भोज खाइबला शुभकामना छोड़ि अड़कच-बथुआ बाजत से की लक्ष्मणपुरक लोक बेकूफ अछि। एते खुशी तँ सबहक मनमे छेलैन्हे जे गामक धरतीसँ अकास टेकै धरिक खाम्ही गाममे बनि ठाढ़ भेला अछि।

तेसर दिन चारि बजे रामानन्द गामसँ विदा हेता। दुपहरक पछातियेसँ समाजक एका-एकी लोक शुभकामनाक संग रामानन्दकेँ अरियातै-ले आबए लगला। ओना, काजुल लोक जँ चारि बजे यात्रा करता तँ ओइसँ पनरह मिनट पहिने तैयारी करैमे लगता आ समयसँ पाँच मिनट पहिने पहुँचैक परियास करता, मुदा अकाजुल तँ बेरक चारि बजेक यात्रा-ले भोरेसँ सिंगार-पेटार नहि करत तँ ओकरा-ले ओ यात्राक सगुन की भेल। मुदा से नहि, रामानन्द भाय ट्रेनिंग कऽ चुकल छला, काज करैक ढंगमे नवपन आबि गेल छेलैन। दुपहरक पछातियेसँ समाजक शुभेझुकेँ देख-देख अपन यात्रा मन पड़ए लगलैन। मुदा ओ तँ चारि बजे हएत। तँए खुला देहक संग रामानन्द अपन शुभचिन्तकक शुभकामना ग्रहण कऽ रहल छला। समाजो तँ समाज छी, जखन बेटियोकेँ लोक धान, हरदी आ दूभिक खोंइछ भरि विदा करैत तखन बेटा तँ सहजे बेटा छी, तहूमे ओहन बेटा जे धरतीसँ उठि अकासक सोंगर बनि ठाढ़ अछि, तँए कियो नववस्त्र तँ कियो बटखरचा, भाड़ा लेल नगद-नारायण सेहो अरपनक संग अर्पित कइये रहल छेलैन।

घरसँ निकलैकाल रामानन्द भाय घर-जनसँ लऽ कऽ गाम-जन तक शुभेक्षुक रूपमे देख रहला अछि। सबहक सेवा सबहक कल्याण मनमे

नाचि रहल छेलैन। सीमा टपबैत जहिना रामकेँ अयोध्यावासी अरियातलकैन तहिना रामानन्द भायकेँ लक्ष्मणपुरवासी अपन गामक सीमान धरि अरियाइत देने रहैन।

पान खेला पछाइत रामानन्द भाय पत्नीकेँ सोर पाड़लैन। ओना, सुलेखाक मन भीतरे-भीतर थौआ भऽ गेल रहैन, मुदा पदक अन्तिम सीढ़ीक रोब तँ अर्द्धमृतो जीवित छेलैन्हे। लगमे अबिते सुलेखा बजली-

"किए एना डकबाहि केलौं?"

पत्नीक शब्दक स्वाद जेना रामानन्द भायकेँ कड़ुआएल बुझि पड़लैन मुदा जहिना चढ़न्त धारक वेग आ उतरन्त धारक वेगक गति बदैल जाइ छै तहिना रामानन्द भायकेँ हुअ लगलैन। मुदा एकटा नमहर जिनगीक भुक्त भोग तँ बनियेँ गेल छला तँए सोचैयो-विचारैक आ बुझबो-सुझबोक नजैर तँ बनियेँ गेल छेलैन। बजला-

"दुनियाँमे हमरा-ले अहाँ सँ लगक दोसर कियो ने अछि, तँए अहाँकेँ एकटा बात कहए चाहै छी।"

दर-दरसँ गुजरल रामानन्द भाइक मन अनुभूतिक संग अनुभव कऽ नेने छेलैन जे जिगनीमे चूक जरूर भेल, जँ से नहि भेल तँ एकतीस बर्ख पूर्वक समाज आइ किए कुद-रूप चेहरा देख भटैक गेल? पतिक कल्पित भाव बुझि सुलेखा अपन गुरुत्वक भाव जगबैत पुछलकैन-

"की कहए चाहै छी?"

विस्मित होइत रामानन्द भाय बजला- "पदक मदमे समाजक संग भारी चूक भेल!"

सुलेखा बजली- "की चूक भेल?"

रामानन्द भाय बजला- "मन बोझिल अछि, काल्हि कहब।"

❑ साभार : गपक पियाहुल लोक

अँगनेमे हेरा गेलौं

कमला धारक छहर टुटने अपना गामकेँ के कहए जे समुच्चा इलाकामे बाढ़ि पसैर गेल। पोखैर-झाँखैरसँ लऽ कऽ गाछी-बिरछी धरि समुद्र जकाँ एक रंग भऽ गेल। रस्ता-पेरा बन्न भेने अपनो आ गामोक लोककेँ चौ-अन्नीसँ बत्तीस-अन्नी धरि बैसारी भऽ गेल। बैसारीमे गामक साहित्य प्रेमी सबहक विचार भेलैन जे अखन साहित्य सृजनक अनुकूल परिस्थिति अछि तँए साहित्यिक आयोजन गाममे हुअए। रस्ता-पेरा खुजल रहने ने बहबाड़ि जकाँ करैए, मुदा से तँ बढ़िसँ घेराएल अछि, तँए एकमुहरी युवजनक विचार भऽ गेल।

साहित्यिक आजोयजनक बीच कथा पाठ आ ओकर समीक्षाक विचार ताँइ होइत पनरह तारीकक दिन निर्धारित भऽ गेल, जेकरा आइ सात दिन बाँकी छइ।

कोनो गाम आकि कोनो समाजमे नव काज भेने गामो आ समाजोक सभ किछु नव-नव रूप धारण करऽ लगैए जइसँ गामो नव आ समाजो नव देखैमे आबिये जाइए।

छह दिन बीतल, सातम दिन आइ छी। आइए तीन बजे अपराहणसँ कार्यक्रम अछि। रंग-रंगक कथाकार एकठाम बैस कथो

सुनौता आ अपनो सुनता आ तैपर समीक्षा केनिहार समीक्षा करता। नवान पाबैन जकाँ नवको अन्न आ पुरनो अन्न अग्नि-आहूत हेबे करत।

गामक जे पुरान लिखबैया छैथ आ गाम-समाजमे साहित्यिक मंच नइ बनने मंचपर कथा वाचैक अवसर नइ भेटलैन हुनको तँ अवसर भेटबे करतैन। संगे जे नवतुरिया नानी-दादीक खिस्सा कागजपर कलमसँ लिखि तैयार करत ओहू नवतुरियाकेँ तँ मंच भेटबे करत, तँए पढ़ल-लिखल समाजमे आरो बेसी खुशी।

अपन बिआहक मरबा देख जहिना बर-कन्याकेँ खुशी होइत तहिना रंगर मंच सजल आ सभ रंगक बेवस्था देख सभ साहित्य प्रेमीकेँ खुशी भेलैन। जे साहित्यिक प्रति पगला गेल छैथ सेहो पहुँचला, आ जे भाड़ा-किराया-फीस लऽ मंचपर जाइ-अबै छैथ, सेहो पहुँचला। तहूमे बाढ़िक समए, मोटबरे ब्लौकेसँ राशनक उठाव भऽ गेल। तँए आमदनियोँक चकचकी रहबे करैन।

गोल-मोल मंच सजल जेकर ऐगला पतियानीमे अपनो बैसल रही। भाषासँ प्रेम रहने साहित्योसँ कनी-मनी लगाव अछिए। से जँ नइ राखब तँ शब्दक ऑपरेशन करैक अपन रोजगारे बन्न भऽ जाएत, कारखाना जकाँ कच्चे मालक अभाव भऽ जाएत...।

..माने ई जे पारा मेडिकल जकाँ कथाक भाषेटा केँ ऑपरेशन करैक लूरि सीखि डॉक्टर छी। तँए मजबूरियो अछि, दूटा बातो सुनि कथेकारक लागि-भागिमे सटल रहै छी, सटल की रहै छी जे सटाएल रहै छी।

गामक कथाकारकेँ पहिल समैयक अवसर कथा-पाठ करैक भेटल। दिनेश भाय, कथा वाचन शुरू केलैन, सोझहा-सोझहीमे हमहीं पड़ैत रहिऐन, तँए हमरे दिस ताकि-ताकि कथा वाचन केलैन। एक तँ गौंआँ तहूमे परिवारसँ जुड़ल, केना नइ दिनेश भायकेँ हमर अपेक्षा

होइतैन। कियो बाहरक होथु आकि गामेक आन टोलक, तिनकासँ तँ हम लग छेलिऐन। मुदा संजोग कहू कि दुर्जोग भाषाक ताकमे शीर्षकेमे हम हेरा गेलौं। शीर्षकेक ऑपरेशन करैमे बुधि, विवेक, मन, नजैर सभ समटा कऽ ऑपरेशनक पाछू लगि गेल। आँखि तँ दिनेश भाइक आँखिसँ मिलैत रहल मुदा शीर्षकेक शब्दमे तेना घुरिया गेलौं जे कानसँ धियान हटि गेल।

समीक्षकक बीच समीक्षा शुरू भेल। पहिल समीक्षक दुतकारि देने छेलैन दिनेश भाइक कथाकेँ। दोसर कनी सम्हारलकैन मुदा तैयो वे-सम्हारे बुझि पड़ैत रहैन। तेसर नम्बरक समीक्षक हम रही। कथा तँ सुनलौं नइ, की समीक्षा करब! ठाढ़ होइत बजलौं-

“दिनेश भाय, अखनो धरि अहाँ-कथाक शीर्षकक भाँज नइ लगल, से कनी आबो फरिछा दिअ।”

अपना विचारे दिनेश भाइक कथाक जड़िकेँ हम तर तक रोपैक कोशिश करैत बाजल रही। मुदा दिनेश भाइक मन खटमिट्ठी जकाँ रहैन।

गुम्हैर कऽ बजला- “बड़ समीक्षक बनै छैथ!”

दिनेश भाइक मन रूष्ट बुझि पड़ल। तँए कनी पाछू हटैत चुपे ऐ आशामे रहलौं जे दिनेश भाइक तामस कमलैन कि ओहिना छैन, आकि आरो चढ़ि गेलैन। से दोहरा कऽ किछु बजता तखने बुझब।

हमरासँ पहिलुका समीक्षकक समीक्षा मनकेँ घोर बना घोड़ैत रहैन जइसँ तामस कमितैन की जे आरो तेजे होइत गेलैन।

बजला- “एहेन रही ते आगूमे नइ बैसी। एकोरती तोरा आँखिमे पानि रहलह, ओहिना ओतेकाल आँखि चढ़ा आँखि मिलौने रहलह!”

अपन हारल रही कि हेराएल रही से निर्णये ने कऽ पबैत रही। दिनेश भाय मुहेँ-काने बोकिया देलैन, मुदा की करितौं। चुप-चाप सभटा घोंटैत अँगनेमे हेराएल रहलौं। ❑ साभार : मधुमाछी

कथाक्रम : पंचदेव (1-100)

एक तम्मा सिदहा
एक घोंट पानि
करतब
पहाड़क बेथा
उदय-प्रलय

खेतक बँटवारा
पैंतीस साल पछुआ गेलौं
माघक चाह
घबाह ट्यूशन
चोर-सिपाही

उरीन
गुणहीन
बड़की माता
पोखला कटहर
राकशे रहि गेलौं

मुफतिया माल
हेराएल जिनगी
करिछौंह मुँह
कियो ने पुछैए
अँगनेमे हेरा गेलौं

वर्थ डे
सजल स्मृति
सेहन्ता
धोखा
एक मुठी घास

डुमैत जिनगी
हूसि गेल
ठेलाबला
जीविका
धर्मनाथ

किरदानी
भरमे-सरम
धोखा केतए भेल
मीनी भ्रष्टाचार
सोमनाकाका

पटियाबला
रिक्साबला
पसेनाक धरम
दूधबला
केना जीब?

सझिया खेती
सतभैंया पोखैर
दनियाँ डाबा
अर्जुन रोग
दोसराइत

उकड़ू समय
अवाक
कलंक : 1
बताहे बताह बनौलक
भैयारी हक

केकरा-ले केलौं
केकरो कियो ने
टुटली मरैया
बगबाइर
अपन मन अपन धन

एक धाप जमीन
भैयारी
साझी
सूदि भरना
सीमा-सरहद

चुनवाली
रेहना चाची
बुधनी दादी : 2
पुरनी नानी
एकबोलिया दादी

लछनमान
बिटगरहा
गलफूलू
लाही
पल भरि

छातीक हार
कोढ़िया सरधुआ
पहपैट
भोरक सपना
खोंटकर्मा

गपक पियाहुल लोक
धरमूदासक अखड़ाहा
हमरा नीक नहि लगैए
कर्ज : 1
आब नइ आगि लगैए?

घूर
एगच्छा आमक गाछ
प्रीगर शत्रु
दहेजुआ गाए
गठूलाक गारि

गण्डा
अब-तब
झूठे
उजगी
जेना हाथी रही

कनी हमरो सुनू
नोकरिहारा
अनका बेर ओंघी
लगबे ने कएल
ओ दिन

पान पराग
फोंक मकड़
झकास
ठोररंगू
हकार

ओझरी
दोती बिआह
कचहरिया रोग
नटकिया गति
भारीपन भार बनि गेल

दिन घटि गेल
पछताबा
परिवारक प्रतिष्ठा
पागलखाना
खाए चाहैए

गामे उपैट गेल
खतियाएल घर
किछु ने फुरैए
तिलकोरक तरुआ
पटोर

बेटाक चलैत
उग्रघारा
बेटीक कुभेला
दोहरी हाक
खिलतोड़

बापक चलैत
गाम बिसैर गेल
ठकहरबा
समैयक बेरबादी
न्याय चाही

रिजल्ट
बाल बोध
अपन गारि अपन दुआरि
सरही सौबजा
अउतरित प्रश्न

पनियाहा दूध
कन्हा भँट्टा
फलहार
गावीस मोइस
निनिया देवीक आराधना

कनियाँ-पुतरा
मानसरोवर यात्रा
गामक शकल-सूरत
मितक प्रयोजन
चैन-बेचैन

पाइक इज्जत
माघक घूर : 1
मधुमाछी
मति-गति
नैहराक धाड़

माघक घूर : 2
चहकल विचार
राक्षसक झड़
सद्विचार
पोखरिक सैरात

मनकमना
कटौज
किछु ने
हथियाएल खुरपी
झुटका विदाइ

खुदियाएल
गलती अपने भेल
बत्तु
असिरवाद उलैट गेल
उड़हैड़

जिगेसा
लेहाज
जानक मोल
समर्पण
स्तब्ध

भोरक झगड़ा
शालीनता
पान
पवनक विवेक
हरवाहि

समरथाइक भूत
समता
सुखाएल सूरत
खजाना
मौसी

कर्ज : 2
टुटल मनक जुटान
ऐंठ साड़ी
अस्तित्वक समाप्ति
जाति नहि पानि

विदाइ
कर्तव्यपरायन सुगा
निशाँ
दान-दैछना
माइक वचन

मथाहाथ
पाइक मोल
गंजन
नमहर फेरा
अपन काज

बेटपन
उमेद
एकोटा ने
कथनी नै करनी
मुसाइ पण्डित

घरवास
भूल
बत्तीसोअना
पुरनी भौजी
अर्द्धांगिनी

खटहा आम
बुधि-बधिया
एकता
उमेरक लेहाज
केते लग केते दूर : 1

जितिया पाबैन
धर्मक असल रूप
शिनीची सिनेह
नवान
असुध मन

महिरम
हाथक जिनगी
सिखबैक उपय
दनगर घास
ढकरपेँच

मुसरी आ घोड़ा
जाड़ फाटि गेल
मुँहक बात मुहेँमे
कनीटा बात
गोहिक शिकार

जारैनक दुख मेटा गेल
इज्जत उतैर गेल
चापाकलक पाइप
घसवाहि
चटवाह

दुरकाल
गामक कटान
मेटाइत जिनगी
कपटी मित
अजाति

परदेशी बेटी
घरदेखिया
ऊँच-नीच
ऑपरेशन
फेर पुछबैन

समधीन
कनमन
नमहर घरक चोइर
पटोटन
पुरुषार्थ

पेटगनाह
गंगा नहेलौं
बकठाँइ
गुलेती दास
खर्च

डॉक्टर हेमन्त
मनुखक मूल्य
तीन जुगिया भाय
आश्रम नहि सोभाव बदली
मायराम

शुभचिन्तक
विधवा बिआह
वैष्णवी भगवती
प्रेमी
शंका

मुइलो बिसेबैन
प्रतिभा
केतौ नै
हमर कोन दोख
असगरे

डीहक बटबारा
मूलधन
छूआ
लफ साग
नहरकन्हा

अपन सन मुँह
पाप आ पुण्य
चोरक चोरबती
मातृभूमि
कटा-कटी

हरदीक हरदा
बेरपर
झगड़ाउ-झोटैला
फॉगु
बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक

उलबा चाउर
पतझाड़
धरम काँट
तिलासंक्रान्तिक लाइ
कठफल

असहाज
बाबा बेलेश्वरनाथ
भोँटक गहमी
जेतए जे हौउ
नौमीक हकार

एकतीस मार्च
अगिलह
स्वर्ग आ नर्क
पीरारक फड़
मनकेँ फुसलबै छी

अकास दीप
माघ नहाइले जाएब
अतहतह
चौरचनक दही
तेतर भाइक कविता

अपन रोपल गाछी भुताहि
डभियाएल गाम
अखरा-दोखरा
गाछपर सँ खसला
सोनाक सुइत

बेटीक लिलसा
पुरान साड़ी
अभिनव अनुभव
अड़िकट्टा चोर
उझट बात

बहिन
मर्माहत
अलपुरिया बरी
दुधियाएल बरखा
चोरूक्का झगड़ा

त्राहि-कृष्ण
संकट
काँच सूत
बीरांगना : 2
सोग

विघटन
बगदल गाम
कलंक
उनटन
विद्गूताक मद

क्रान्तियोग
पाही पट्टी
गोहाइर
मरियाएल मन
मदैत नै चाही

अनेरुआ बेटा
कछमछी
समदाही
वारंट
एकाग्रचित

बोनिहारिन मरनी
आशापर पानि पड़ल
बुढ़िया दादी
बाबी
बुधनी दादी : 1

गलगर भैंस
प्रवल इच्छा
अधखरूआ
मोहरा
भँसियाएल बाल-बोध

क्रियाशील
समझौता
रत्न गमेवाक दुख
भाइक सिनेह
हारि

दूटा पाइ
अपने केलहा
समुद्री विद्या
बीरांगना : 1
अनुशासन

जाम
विदाइ-दैछना
टाइपिस्ट
गजपट खेती
सुआद

बिहरन
हारि-जीत : 1
अपसोच
अपन पुरखाक डीह
खलओदार

पढ़ल सुगा बौक
गेल माघ उनतीस दिन बाँकी
मान
बालमण्डली
नीक बोल

कियो ने
स्वरोजगार
झिसीक मजा
लतियाएल जिनगी
सजमनियाँ आम

त्रिकालदर्शी
सड़ल दारीम
बटखौक
स्मृति शेष
बिसवास

हाथी आ मूस
गामक बान्ह
पनचैती
भबडाह
दूरी

गामक मुँह फेर देखब
गुड़ा-खुद्दीक रोटी
चौकीदारी
देव उठान
अनदिना

सुमति
आशापर पानि फेर गेल
चर्मरोग
केतौ ने रहलौं
मुँह-कान

बाबाक बाग-बगिया
पुरस्कार
फुसियाह
गामक सुरता
कचोट

जेकर चुन तेकर पुन
एते दिन अपना-ले आब अनका-ले
रमैत जोगी बोहैत पानि
पनचैती पनपना गेल
जेठुआ गरदा

खसैत गाछ
केते लग केते दूर : 2
कुघाटक मृत्यु
ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल
मुड़ियाएल घर

उचितवक्ता
हारि-जीत : 2
हँसीएमे उड़ि गेलौं
मनोरथ
धरती-अकास

विचार हेरा गेल
घर तोड़ि देलिऐ
आजुक जिनगीक आइ परीछा
दोहरी मारि
धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!

डकरा हाल
सीरक गाछ
परतीहा खढ़
गरदैन कट्टा बेटा
कर्जखौक

सुरता
सगहा
पकिया चेला
अनगढ़ चेतना
धोतीक मान

चुप्पा पाल
जन्मतिथि
दियरबा-भैंसुर
फज्झैत
भुतलग्गू आकि भविसलग्गू

सिरमा
मनुखदेवा
अप्पन-बीरान
सुभिमानी जिनगी
मरूभूमि

मइटुग्गर
आने जकाँ
उमकी
मुँहक खतियान
ओसार

सरोजनी

सुभद्रा

देखल दिन : 1

पड़ाइन

चास-बास दुनू गेल

बेटी हम अपराधी छी

भोलानाथ बाबा

घटक बाबा

इजोरिया राति

भँसैत नाह

शम्भुदास

शिवजीक डाक-बाक्

सजाए

छुटि गेल

कनफुसकी

फाँसी

गति-मुक्ति

बजन्ता-बुझन्ता

अप्पन हारि

कोसलिया

मुसहैन

बिसाँढ़

मत्हानि

तेरहो करम

बात-कथा सुनौलक

बेटीक पैरुख

गैत-वीध

बेवहारिक

ठका गेलौं

साए कच्छे

करिछौन लाली

बलजोर

गति-गुद्दा

कलम हानि कऽ

अकाल

भैंटक लावा

डंका

काल्हि दिन

इमानदार घूसखोर

सनेस : 1

५-५ टा कथाक १०० संग्रहक ई पंचदेव शृंखला मैथिलीमे पॉकेट-बुक्सक कमीकेँ पूर्ण करत। जतेक पन्ना, ततेक दाम, मोटामोटी दस-दस पन्नाक कथा। से पढ़ैयोमे सुभितगर आ कीनैयोमे सस्ता। एक उखड़ाहामे एकटा पॉकिट बुक्स खतम भऽ सकए, से साएगो पोथी साए उखड़ाहाक खोराकी भेल। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ बीछल ऐ सभ रचनाक विषय-वस्तु अहाँक सामाजिक ज्ञानकेँ मोनो पाड़त आ बढ़ेबो करत आ अहाँकेँ सामाजिक प्राणी हेबाक बोधो कराएत। अहाँकेँ अधिकारक संग कर्तव्यक स्मरण कराएत, सरोकारी बनाएत। आ ई सभ मनोरंजनक संग भेटत। मैथिलीक ई पहिल पॉकेट-बुक्स सीरीज स्वागत योग्य अछि। **-गजेन्द्र ठाकुर**

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रचना संसार : 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर-नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन, 26. पंगु, 27.आमक गाछी- उपन्यास। 28. कल्याणी, 29. सतमाए, 30. समझौता, 31. तामक तमघैल, 32. बीरांगना- एकांकी। 33. तरेगन, 34. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 35. शंभुदास, 36. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 37. गामक जिनगी, 38. अर्द्धांगिनी, 39. सतभैंया पोखैर, 40. गामक शकल-सूरत, 41. अपन मन अपन धन, 42. समरथाइक भूत, 43. अप्पन-बीरान, 44. बाल गोपाल, 45. भकमोड़, 46. उलबा चाउर, 47. पतझाड़, 48. लजबिजी, 49. उकड़ू समय, 50. मधुमाछी, 51. पसेनाक धरम, 52. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 53. फलहार, 54. खसैत गाछ, 55. एगच्छा आमक गाछ, 56. शुभचिन्तक, 57. गाछपर सँ खसला, 58. डभियाएल गाम, 59. गुलेती दास, 60. मुड़ियाएल घर, 61. बीरांगना, 62. स्मृति शेष, 63. बेटीक पैरुख, 64. क्रान्तियोग, 65. त्रिकालदर्शी, 66. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 67. दोहरी हाक, 68. सुभिमानी जिनगी, 69. देखल दिन, 70. गपक पियाहुल लोक, 71. दिवालीक दीप, 72. अप्पन गाम- लघु कथा संग्रह।





पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452